सेन्ट्रल मंथन

केवल आंतरिक परिचालन हेतु

खंड 8 • अंक - 2

सितंबर - 2024

भाषायी विविधता में राजभाषा

विशेष आकर्षण

प्रचार की भाषा

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

G20 भारत 2023 INDIA

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय मदुरै के संयोजन में कार्यरत नराकास मदुरै को भाषिक क्षेत्र 'ग' में तृतीय स्थान प्राप्त हुआ. नई दिल्ली में दिनांक 14.09.2024 को आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में इस पुरस्कार शील्ड को माननीय केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री, भारत सरकार श्री नित्यानंद राय से प्राप्त करती हुई महाप्रबंधक राजभाषा सुश्री पॉपी शर्मा एवं प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री मेहेर कुमार पाणिग्रही, क्षेत्रीय प्रमुख, मदुरै.

चंडीगढ में दिनांक 22.08.2024 को वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा हमारे बैंक को श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रदत्त तृतीय पुरस्कार को प्राप्त करती हुई माननीय महाप्रबंधक सुश्री पॉपी शर्मा, चंडीगढ अंचल प्रमुख श्री शीशराम तुंदवाल एवं चंडीगढ़ क्षेत्रीय प्रमुख श्री सुधांशु शेखर. इस अवसर पर बैंक द्वारा राजभाषा प्रदर्शनी भी लगाई गई एवं चंडीगढ अंचल की ई - पत्रिका का विमोचन किया गया.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिन्दी गृह-पत्रिका
(केवल आंतरिक परिचालन हेतु)

प्रकाशन तिथि : 14 नवंबर, 2024 • खंड 8 • अंक - 2 • जून, 2024

प्रधान संरक्षक

श्री एम. वी. राव
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक

श्री विवेक वाही
कार्यपालक निदेशक

श्री एम. वी. मुरली कृष्णा
कार्यपालक निदेशक

श्री महेन्द्र दोहरे
कार्यपालक निदेशक

उप संरक्षक

सुश्री पॉपी शर्मा
महाप्रबंधक (मासंवि / राजभाषा)

संपादक

श्री राजीव वार्ष्णेय
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहायक संपादक

श्री हितेन्द्र धूमाल

सुश्री अनिता धुर्वे

श्री सुनील कुमार साव

विषय-सूची

▶ माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी.राव का संदेश 2

▶ माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का हिन्दी दिवस संदेश 3

▶ माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश 4

▶ माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम.वी.मुरली कृष्णा का संदेश 5

▶ माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेन्द्र दोहरे का संदेश 6

▶ माननीय महाप्रबंधक (राजभाषा) सुश्री पॉपी शर्मा का संदेश 7

▶ संपादकीय 8

▶ सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (पीएफएमएस) 9

▶ ''अदावाकृत खातों का सक्रियकरण'' 12

▶ जांस्कर मोहब्बत है 14

▶ कृत्रिम बुद्धिमत्ता: भविष्य की दिशा में एक कदम 15

▶ रेसेपी 17

▶ महिला नेतृत्व 18

▶ महिला नेतृत्व का इतिहास वर्तमान एवं भविष्य 21

▶ एक कदम स्वच्छता की ओर 23

▶ जलवायु जोखिम और टिकाऊ वित्त 25

▶ प्रेरणादायी संस्मरण 35

▶ लोकल ट्रेन का सफर 37

▶ हमारी हिंदी अंतर्राष्ट्रीय भाषा! 38

▶ नियमित प्रयुक्त अंग्रेजी नोटिंग का हिंदी अनुवाद 40

ई-मेल/Email : centralmanthan@centralbank.co.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार अनिवार्यत: बैंक के नहीं हैं.

डिज़ाइन, संपादन तथा प्रकाशन : राजीव वार्ष्णेय, सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा, एम.जी.रोड, फोर्ट, मुंबई - 400 023 के लिए तथा उनके द्वारा उचीथ ग्राफिक प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड. आइडियल इंडस्ट्रीयल इस्टेट, मथुरादास मिल्स कंपाऊंड, सेनापती बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400 013.

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी.राव का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम मैं आप सभी को आगामी पर्वों की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए सितंबर 2024 तिमाही में बैंक के उत्कृष्ट कार्य परिणामों के लिए हार्दिक बधाई देता हूं.

अनेकता में एकता वाले देश भारत में जहां भिन्न-भिन्न प्रकार के पहनावे, खानपान, उत्सव आदि होते हैं वहीं इस देश में अनेकों भाषाएँ भी बोली जाती हैं. भारत की भाषायी विविधताओं के मध्य इन भाषाओं को बोलने वालों की संख्या करोड़ों में है और ये भाषाएं विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में सम्मिलित हैं. भारत सरकार ने इनमें से कुछ भाषाओं को शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता दी है. इन सभी भाषायी विविधताओं के बीच भारतीय संविधान में हिंदी को संघ सरकार की राजभाषा स्वीकार किया गया है. संघ सरकार की भाषा के रूप में हिंदी को भारत सरकार के कार्यालयों में उपयोग किया जाता है. सभी भाषायी वर्गों के कर्मचारियों ने भी राजभाषा के रूप में न केवल हिंदी को सहज स्वीकार किया है, बल्कि वह हिंदी में बहुत अच्छा कार्य भी करते हैं.

हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, साथ ही हिंदी देश के हर क्षेत्र में कम या अधिक बोली जाती है. इस तरह से हिंदी स्वत: ही देश की संपर्क भाषा बन चुकी है.

बैंकिंग सेवाएँ ग्राहकों को जोड़ती हैं एवं उनसे एक रिश्ता सा बनवाती है. एक लोकप्रिय भाषा के रूप में हिंदी हमें ग्राहकों से बेहतर संपर्क करवाती है. जब हम ग्राहकों से उनकी भाषा में बोलते हैं तो उन्हें पूर्ण संतुष्टि मिलती है, जो हमारे व्यवसाय वृद्धि में सहायक होता है.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया में हमें हिंदी को व्यवसाय की भाषा एवं प्रचार की भाषा के रूप में प्रयोग करना चाहिए. सभी सेन्ट्रलाइट अपने कार्यालयों के कामों में हिन्दी का अधिक से अधिक उपयोग करें, ग्राहकों को बेहतर सेवाएं दें, और बैंक के व्यवसाय को अधिक से अधिक बढ़ाएं.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(एम. वी. राव)

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

एम वी राव
व्यवस्थापकीय संचालक आणि सीइओ
एम वी राव
प्रबंध निदेशक एवं सीइओ
M V Rao
Managing Director & CEO

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

हिन्दी दिवस संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम हिन्दी दिवस - 2024 की हार्दिक शुभकामनाएं,

हमारे देश में सांस्कृतिक, धार्मिक एवं भाषाई विविधता है. लेकिन इन विविधताओं के बावजूद लोगों के बीच आपसी सद्भाव ही भारत की एकता और अखंडता की नींव है. इस एकता का एक कारण भिन्न – भिन्न भाषा भाषियों द्वारा हिंदी को प्रेमपूर्वक अपनाना भी है हमारे देश की स्वतंत्रता के पश्चात संविधान निर्माताओं ने हिंदी की इसी विशेषता के कारण उसे देश की राजभाषा बनाया था.

भारत विश्व की सर्वाधिक तीव्र गति से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था है. क्रमश: विश्व पटल पर भारत एक अत्यंत महत्वपूर्ण आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है. ऐसे में भारत सरकार की संस्थाओं में कार्यरत कार्मिकों का कर्तव्य है कि वे कार्यालयीन कार्यों में संघ की राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें. साथ ही अपने निजी कार्यों में अपनी - अपनी मातृभाषाओं का अधिक से अधिक प्रयोग करें. जिससे वैश्विक स्तर पर उभरती अर्थव्यवस्था के साथ - साथ हमारी अति समृद्ध भारतीय भाषाएं भी अपनी पहचान बना सकें.

हिंदी और भारतीय भाषाओं में काम करना सरकारी नियमों का अनुपालन तो है ही इसके अतिरिक्त इससे भारतीय नागरिकों के लिए भी सहजता होती है. आज सभी भारतीय भाषाएं डिजिटली भी सक्षम हैं.

जैसा कि आप जानते है हम प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया में दिनांक 14.09.2024 से 14.10.2024 तक हिंदी माह मना रहे हैं. इस अवसर पर सभी सेन्ट्रलाइट अपना अधिक से अधिक कार्य राजभाषा हिंदी में करते हुए हिंदी माह को सफल बनाएं.

हिन्दी दिवस के अवसर पर, आइए हम अधिक से अधिक कार्य राजभाषा हिन्दी में करने का संकल्प लें.

जय हिन्द, जय भारत

एम वी राव

(एम.वी.राव)

चंदर मुखी, नरीमन पॉईंट, मुंबई - ४०० ०२१. चन्दर मुखी, नरीमन पॉइंट, मुंबई - ४०० ०२१.
Chander Mukhi, Nariman Point, Mumbai - 400 021
☎ 2202 4393 / 2202 3942 (022) 2202 8122 ✉ mdceo@centralbank.co.in

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

भारत की अनेक विशेषताओं के मध्य यहां की भाषाई विविधता विशेष रूप से उल्लेखनीय है. प्राचीन संस्कृत भाषा से लेकर आधुनिक हिंदी सहित कई शास्त्रीय भाषाएं भी भारत में बोली जाती हैं. इन भाषाओं में समृद्ध साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है.

हिंदी भारत के सर्वाधिक भौगोलिक क्षेत्र की भाषा होने के साथ-साथ सबसे अधिक जनसंख्या द्वारा बोली जाने वाली भाषा है, और हिंदी भारत सरकार की राजभाषा भी है.

संविधान के अनुच्छेद 343 में हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया इसके बाद राजभाषा अधिनियम और नियम बने हैं जो राजभाषा हिंदी में काम करने के निर्देश प्रदान करते हैं. भारत सरकार का गृह मंत्रालय प्रति वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी करता है जिसके अनुसार कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया में प्रारंभ से ही राजभाषा कार्यान्वयन के लिए सकारात्मक वातावरण रहा है. लगातार मिल रहे राजभाषा पुरस्कारों से यह प्रमाणित भी होता है. सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया में हमारा मानना है कि हम जनता का कार्य जनता की भाषा में करें, ग्राहकों की भाषा में उनसे व्यवहार करें, और देश की बड़ी जनसंख्या तक पहुँचने के लिए देश की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा में प्रचार करें, जो स्वाभाविक रूप से हिंदी है.

राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारा संवैधानिक कर्तव्य है, इसलिए प्रत्येक सेन्ट्रलाइट को अधिकाधिक कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिंदी में करना चाहिए.

हार्दिक शुभकामनाएं सहित.

(विवेक वाही)
कार्यपालक निदेशक

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम.वी.मुरली कृष्णा का संदेश

प्रिय सेंट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम मैं आगामी पर्वों की शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए सितंबर 2024 तिमाही में बैंक द्वारा दर्शाए गए उत्कृष्ट कार्य परिणामों के लिए आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं.

हम सभी जानते हैं कि भारत देश में अनेकों भाषाएं बोली जाती है. भारत में कई शास्त्रीय भाषाएं भी हैं. भारत की संविधान सभा ने दिनांक 14 सितंबर 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है. इसी प्रकार संविधान में भारत के सभी राज्यों को उनकी राजभाषा चुनने का भी अधिकार दिया है, जिसके फलस्वरुप आज भारत के भिन्न-भिन्न राज्यों की अपनी-अपनी राजभाषाएं हैं.

सरकार की भाषा नीति के अनुसार हम सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया में राजभाषा का कार्यान्वयन कर रहे हैं. राजभाषा हिंदी में काम करने का एक लाभ यह भी है कि सरकारी नियमों के अनुपालन के साथ-साथ हम अपने ग्राहकों से भी सहज व्यवहार कर पाते हैं. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया एक व्यावसायिक बैंक है. बैंक के विस्तार में भाषा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है. भारत की राजभाषा हिंदी देश के सबसे बड़े भू-भाग की भी भाषा है. इसलिए हमारे व्यवसाय के लिए भी आवश्यक है कि हम राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें. इससे हमारी ग्राहक सेवा भी बेहतर होती है.

देखा जाए तो हिंदी सहज ही प्रचार की भी भाषा है और इसलिए हमें अपने उत्पादों के प्रचार के लिए भी राजभाषा हिंदी का भरपूर उपयोग करना चाहिए क्योंकि हिंदी भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है. इसलिए हिंदी में कार्य करना या अपने उत्पादों का प्रचार करना हमें बहुत बड़ी जनसंख्या से सहज जोड़ देता है.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(एम वी मुरली कृष्णा)
कार्यपालक निदेशक

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेन्द्र दोहरे का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

कहा जाता है:

''चार कोस पर बदले पानी, आठ कोस पर वाणी.''

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में यह कहावत हमारी भाषायी संस्कृति को बखूबी दर्शाती है. यहां हर कोस पर भाषा, बोलियों और अभिव्यक्तियों में विविधता देखने को मिलती है. अनेक भाषाओं के साथ-साथ हमारे देश में कई प्राचीन भाषाओं का गौरवशाली इतिहास है, जिनमें उत्कृष्ट साहित्य रचा गया है और जिनका आज भी व्यापक प्रभाव है.

ऐसी अद्वितीय भाषायी विविधता के बीच हिंदी को हमारी संघ सरकार की राजभाषा का दर्जा प्राप्त है. राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए संवैधानिक प्रावधान, राजभाषा अधिनियम और नियम बनाए गए हैं, जो कि हमारे बैंक सहित सभी सरकारी संस्थानों पर लागू होते हैं.

यह हमारे लिए अत्यंत गर्व का विषय है कि सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया ने हमेशा राजभाषा नियमों का निष्ठापूर्वक अनुपालन किया है. यही कारण है कि हमारा बैंक लगातार राजभाषा पुरस्कारों से सम्मानित होता आ रहा है. हमारा मानना है कि हिंदी में कार्य करना न केवल हमारा संवैधानिक कर्तव्य है, बल्कि यह हमारे ग्राहकों से संवाद और उनके साथ संबंध स्थापित करने का सबसे सशक्त माध्यम भी है.

हमारे बैंक में हिंदी को उत्पादों और सेवाओं के प्रचार का भी सबसे प्रभावी साधन माना गया है. इसके माध्यम से हम न केवल अपनी सेवाओं को ग्राहकों तक बेहतर तरीके से पहुंचा सकते हैं, बल्कि उनकी भाषा में उनसे संवाद करके बेहतरीन ग्राहक सेवा का उदाहरण भी प्रस्तुत कर सकते हैं.

मैं सभी सेंट्रलाइट्स से आह्वान करता हूँ कि वे अधिक से अधिक कार्य राजभाषा हिंदी में करें और ग्राहकों से उनकी भाषा में संवाद करने का प्रयास करें. यह न केवल हमारे बैंक की छवि को मजबूत करेगा, बल्कि ग्राहक संतुष्टि के स्तर को भी बढ़ाएगा.

राजभाषा हिंदी के माध्यम से सशक्त भविष्य की ओर बढ़ने के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं.

हार्दिक शुभकामनाएं सहित.

(महेन्द्र दोहरे)
कार्यपालक निदेशक

माननीय महाप्रबंधक (राजभाषा) सुश्री पॉपी शर्मा का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम आगामी पर्वों, उत्सवों एवं त्यौहारों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं.

माननीय एमडी एवं सीईओ सर तथा तीनों कार्यपालक निदेशकों के सक्षम नेतृत्व में हमारे प्रिय बैंक ने वर्ष 2024-25 की सितंबर तिमाही के दौरान शानदार परिणाम दर्शाए हैं. मैं बैंक के सर्वोच्च प्रबंधन के प्रति आभार व्यक्त करती हूं तथा सार्थक प्रयासों के लिए आप सभी को बधाई देती हूं.

राजभाषा का अर्थ है शासन के कामकाज की भाषा. हिंदी हमारे देश की राजभाषा है. भारत सरकार के संस्थानों, उपक्रमों, कार्यालयों में राजभाषा में कार्य करने के लिए स्पष्ट नियम और लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं. हमारा यह कर्तव्य है कि हम इन नियमों का पालन करते हुए अपने सभी राजभाषा लक्ष्यों को समयबद्ध तरीके से प्राप्त करें.

मैं सेन्ट्रल मंथन पत्रिका के इस अंक के माध्यम से आप सबको अवगत कराना चाहती हूं कि इस वर्ष भी हमारा बैंक कर्मचारियों और अधिकारियों के सभी संवर्गों और वेतनमानों के लिए पदोन्नति प्रक्रिया प्रारंभ कर चुका है. सभी पात्र कर्मचारी और अधिकारी इन प्रक्रियाओं में उत्साहपूर्वक सहभागी हों और अपने करियर को नई ऊंचाई पर ले जाने का प्रयास करें.

हमारा उच्च प्रबंधन एचआरएमएस को यूजर फ्रेंडली बनाने की दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है और इसमें कई नई सुविधाओं को समाहित किया जा रहा है. इसके साथ ही कर्मचारियों के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देते हुए ऑनलाइन योगा कक्षाओं के अतिरिक्त प्रैक्टो एवं वन टू वन जैसे ऐप के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं. इस वर्ष के लिए कर्मचारियों के लिए हेल्थ इंश्योरेंस टीपीए निर्धारित हो चुका है एवं शीघ्र ही समस्त कर्मचारियों को हेल्थ कार्ड प्रेषित किए जाएंगे.

मैं आप सभी से आग्रह करती हूं कि बैंक के साथ अपने जुड़ाव को और अधिक प्रगाढ़ करें और अपने समर्पण एवं परिश्रम से हमारे बैंक को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएं.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(पॉपी शर्मा)
महाप्रबंधक - राजभाषा

संपादकीय

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

आगामी पर्वों की हार्दिक शुभकामनाओं सहित मैं सम्माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी तथा तीनों माननीय कार्यपालक निदेशकों के कुशल नेतृत्व में हमारे प्रिय बैंक द्वारा वर्ष 2024-25 की सितंबर तिमाही के दौरान दर्शाए गए उत्कृष्ट कार्य परिणामों के लिए आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं.

भाषा प्राणियों के मध्य मानव संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है. दुनिया में अनेकों भाषाएं बोली जाती हैं. अगर हम दुनिया की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा की बात करें तो हिंदी शीर्ष तीन भाषाओं में मानी जाती है. हिंदी भारत की भाषायी विविधताओं के मध्य देश के नागरिकों के लिए सम्पर्क भाषा भी है. हमारे देश में हिंदी की सर्वव्यापकता के कारण वह प्रचार की भाषा भी बन गयी है. देशी, विदेशी, सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनियां एवं निजी क्षेत्र की कम्पनियां भी अपने उत्पादों के प्रचार के लिए अब हिंदी का भरपूर प्रयोग कर रही हैं.

प्रचार तभी सार्थक होता है जब वह बड़ी जनसंख्या के दिल तक पहुंचे. हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में किया गया प्रचार कार्य सहजता से भारतीयों के मन तक पहुंचता है जबकि केवल अंग्रेजी में किया जाने वाला प्रचार कार्य सीमित जनसंख्या तक ही पहुंच सकता है. हमें हर स्तर पर इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि राजभाषा नियमों का अनुपालन हो तथा हमारा कार्य अधिकतम जनसंख्या के दिल तक पहुंचे जो केवल हिंदी एवं भारतीय भाषाओं से ही संभव है.

हिंदी भारत संघ की राजभाषा भी है. गृह मंत्रालय भारत सरकार प्रतिवर्ष वार्षिक राजभाषा कार्यक्रम जारी कर पत्राचार, टिप्पणी इत्यादि के लिए लक्ष्य निर्धारित करता है. हमारा कर्तव्य है कि हम राजभाषा हिंदी में अच्छे कार्यों को जारी रखें, सभी राजभाषा लक्ष्यों को अच्छे से प्राप्त करें तथा राजभाषा के माध्यम से बैंक की योजनाओं का प्रचार-प्रसार करें साथ ही बैंक की छवि निर्माण में योगदान दें.

हार्दिक शुभकामनाएं.

(राजीव वार्ष्णेय)
सहायक महाप्रबंधक - राजभाषा

सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (पीएफएमएस)

Public Financial Management System (PFMS)

परिचय:

1. सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (पीएफएमएस), एक वेब-आधारित ऑनलाइन सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन है जिसे महालेखा नियंत्रक कार्यालय (Office of controller General of Accounts under Department of Expenditure of Ministry of Finance) द्वारा विकसित और कार्यान्वित किया गया है.
2. इसे पहले केंद्रीय योजना निगरानी प्रणाली (सीपीएसएमएस) के रूप में जाना जाता था.
3. पीएफएमएस की शुरुआत 2009 के दौरान भारत सरकार की सभी योजनाओं के तहत जारी निधियों पर नज़र रखने और कार्यक्रम कार्यान्वयन के सभी स्तरों पर व्यय की रियल टाइम रिपोर्टिंग के उद्देश्य से हुई थी.
4. इसके बाद वर्ष 2013 में, योजना और गैर-योजना दोनों योजनाओं के तहत लाभार्थियों को सीधे भुगतान (Direct Benefit transfer i.e. DBT) को कवर करने के लिए इसका दायरा बढ़ा दिया गया.
5. पीएफएमएस की कार्यक्षमताओं में नवीनतम वृद्धि 2014 के अंत में शुरू हुई, जिसमें यह परिकल्पना की गई कि खातों का डिजिटलीकरण पीएफएमएस के माध्यम से किया जाएगा और वेतन और लेखा कार्यालयों के भुगतान के साथ शुरुआत करते हुए, सीजीए कार्यालय ने पीएफएमएस के दायरे में भारत सरकार की और अधिक वित्तीय गतिविधियों को शामिल करके मूल्यवर्धन किया.

पीएफएमएस का प्राथमिक उद्देश्य एक कुशल निधि प्रवाह प्रणाली के साथ-साथ भुगतान सह लेखा नेटवर्क की स्थापना करके भारत सरकार (GoI) को एक ठोस सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली की सुविधा प्रदान करना है.

पीएफएमएस की खासियत:

1. पीएफएमएस की सबसे बड़ी ताकत बैंकों के कोर बैंकिंग सिस्टम (CBS) के साथ, NPCI के NACH के साथ, भारतीय रिज़र्व बैंक के ई-कुबर साथ और राज्य सरकार के ट्रेज़री विभाग (State IFMIS) के साथ इसका एकीकरण (Integration) है. नतीजतन, वित्तीय लेन-देन में बाधा नहीं आती तथा सार्वजनिक धन के प्रबंधन में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित होती है .
2. पीएफएमएस में लगभग हर लाभार्थी/विक्रेता को ऑनलाइन भुगतान करने की अनूठी क्षमता है.
3. वर्तमान में, पीएफएमएस में सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों, प्रमुख निजी क्षेत्र के बैंकों, भारतीय रिजर्व बैंक, भारतीय डाक और सहकारी बैंकों के कोर बैंकिंग सिस्टम (सीबीएस) के साथ इंटरफेस है.

पीएफएमएस के अंतर्गत केंद्रीय क्षेत्र और केंद्र प्रायोजित योजनाओं के तहत व्यय एवं अन्य व्यय शामिल हैं-

1. **केंद्रीय क्षेत्र योजनाएँ**
   - ये योजनाएँ केंद्र सरकार द्वारा 100% वित्त पोषित हैं.
   - इन्हें केंद्र सरकार की मशीनरी द्वारा लागू किया जाता है.
   - मुख्य रूप से संघ सूची के विषयों पर गठित हैं.
   - जैसे- भारतनेट, नमामि गंगे-राष्ट्रीय गंगा योजना इत्यादि.
2. **केंद्र प्रायोजित योजनाएँ**
   - केंद्र प्रायोजित योजनाएँ वे योजनाएँ हैं जो राज्य सरकार द्वारा कार्यान्वित की जाती हैं लेकिन केंद्र सरकार द्वारा एक निर्धारित हिस्सेदारी के साथ प्रायोजित की जाती हैं.

पीएफएमएस के कुछ मुख्य फायदे:

1. विभिन्न योजनाओं में संसाधनों की उपलब्धता और उपयोग पर वास्तविक समय की जानकारी.
2. बेहतर कार्यक्रम और वित्तीय प्रबंधन.
3. सिस्टम में फ़्लोट में कमी.
4. लाभार्थियों को सीधा भुगतान.
5. अधिक पारदर्शिता और जवाबदेही.
6. प्रभावी निर्णय समर्थन प्रणाली और धन की ट्रैकिंग.
7. रसीदों के ऑनलाइन संग्रहण के लिए सरकारी विभागों/मंत्रालयों के एप्लिकेशन के साथ एकीकरण.

पीएफएमएस के माध्यम से भुगतान करने हेतु पात्रता

विभिन्न सरकारी योजनाओं को चलाने के लिए भारत सरकार से सहायता अनुदान प्राप्त करने के पात्र व्यक्ति/संगठन विक्रेताओं/लाभार्थियों को अपने भुगतान के लिए पीएफएमएस चैनल का उपयोग करने के लिए हमारे बैंक में या किसी अन्य बैंक में अपने खाते खोल सकते हैं -

1) केंद्र सरकार के विभाग
2) केंद्र सरकार पीएसयू
3) राज्य सरकार पीएसयू
4) वैधानिक निकाय
5) स्थानीय निकाय
6) पंजीकृत सोसायटी
7) राज्य सरकार के संस्थान

पीएफएमएस में हमारे बैंक की स्थिति

हमारा बैंक पीएफएमएस पोर्टल के साथ समेकित (seamlessly integrated) है और डीबीटी / गैर डीबीटी भुगतान से संबंधित लेनदेन की प्रक्रिया करता है. पीएफएमएस में हमारे बैंक की भूमिका पीएफएमएस से प्राप्त फाइल को प्रोसेस करने की है यानि कि -

1. लाभार्थियों के बैंक अकाउंट को वैलिडेट (सत्यापित) करना.
2. फाइल में प्राप्त विवरण के अनुसार एजेंसी के अकाउंट को डेबिट करके लाभार्थी को भुगतान करना और भुगतान की सही स्थिति की सूचना पीएफएमएस को देना.
3. प्रतिदिन एजेंसी के एन्ड ऑफ़ डे (EoD) के बैंक बैलेंस का विवरण अगले दिन पीएफएमएस को देना.

एजेंसी द्वारा पीएफएमएस के माध्यम से भुगतान चालू करने के लिए औपचरिकता

कोई एजेंसी जिसका अकाउंट हमारे बैंक में है और वो पीएफएमएस के द्वारा किसी तरह का भुगतान हमारे बैंक से कराना चाहते है तो सबसे पहले एजेंसी को पीएफएमएस के लोकल ऑफिस में इस आशय का पत्राचार कर के अपने बैंक अकाउंट को पीएफएमएस में समेकित करना होता है और पीएफएमएस के पोर्टल में लॉगिन (यूजर आई डी) बनवाना होता है. फिर चेकर और मेकर के लॉगिन से एजेंसी को लाभार्थियों का विवरण डालना होता है जिसमें उनके बैंक डिटेल भी शामिल हैं. लाभार्थियों के बैंक डिटेल पीएफएमएस द्वारा बैंक के माध्यम से वैलिडेट होते हैं जिसके बाद एजेंसी उन लाभार्थियों को भुगतान करने के लिए पेमेंट फाइल बना सकती है.

एजेंसी द्वारा PFMS के माध्यम से भुगतान करने की प्रक्रिया कुछ इस प्रकार है:

1. **PFMS पोर्टल पर लॉगिन:** सबसे पहले, एजेंसी को **PFMS** पोर्टल पर लॉगिन करना होगा.
2. **भुगतान का अनुरोध:** लॉगिन करने के बाद, एजेंसी को भुगतान का अनुरोध करना होगा. इसमें भुगतान की राशि, लाभार्थी का विवरण और अन्य आवश्यक जानकारी शामिल होगी.
3. **बैंक विवरण:** एजेंसी को बैंक अकाउंट का विवरण देना होगा जिसके माध्यम से भुगतान किया जाना है. इसमें बैंक का नाम, खाता संख्या, आईएफसी कोड आदि शामिल होगा.
4. **अधिकार प्राप्ति:** भुगतान करने के लिए, एजेंसी को उचित अधिकार प्राप्त होना चाहिए.
5. **सत्यापन:** PFMS सिस्टम भुगतान के अनुरोध को सत्यापित करेगा.
6. **भुगतान का निष्पादन:** एक बार सत्यापन हो जाने के बाद, भुगतान का निष्पादन किया जाएगा. भुगतान सीधे लाभार्थी के बैंक खाते में ट्रांसफर किया जाएगा.
7. **भुगतान की पुष्टि:** भुगतान होने के बाद, एजेंसी को भुगतान की पुष्टि मिल जाएगी.

हमारे बैंक में पीएफएमएस के माध्यम से भुगतान करने के तरीके (Payment Modes)

1) डिजिटल हस्ताक्षर प्रमाणपत्र आधार

1. डीएससी भुगतान फ़ाइल को एनपीसीआई के एनएसीएच चैनल के माध्यम से आगे संसाधित किया जाता है.
2. डीएससी फाइलों के माध्यम से भुगतान करने के लिए डीएससी का पहले से पंजीकृत होना अनिवार्य है.
3. डिजिटल रूप से हस्ताक्षरित भुगतान अनुरोध फ़ाइल पीएफएमएस द्वारा बैंक के एसएफटीपी में रखी जाती है और डेबिट प्राधिकरण डिजिटल हस्ताक्षर के साथ बंडल की जाती है.
4. डीएससी फाइल को केंद्रीय कार्यालय द्वारा प्रोसेस किया जाता है, जिसमें शाखा की भूमिका नहीं होती है.

2) प्रिंटेड पेमेंट एडवाइस

1. भुगतान मोड पीपीए (प्रिंट भुगतान सलाह) का उपयोग पीएफएमएस में कई एजेंसियों द्वारा किया जाता है, जो डिजिटल हस्ताक्षर भुगतान मोड से परिचित नहीं हैं.
2. पीएफएमएस पोर्टल में अनुरोध सबमिट करने के बाद एजेंसी शाखा में पीपीए हार्ड कॉपी जमा करती है, शाखा एजेंसी खाते के संचालन के तरीके के अनुसार हस्ताक्षर का मिलान करती है. यह पर्याप्त धनराशि की उपलब्धता की भी पुष्टि करता है और इसकी पंचिंग ऍंए के मेनू में करती है.
3. इस फ़ाइल को एनपीसीआई के एनएसीएच चैनल के माध्यम से आगे संसाधित किया जाता है.
4. प्रिंट भुगतान सलाह अनुरोध फ़ाइल को पीएफएमएस द्वारा बैंक के एसएफटीपी पर बिना किसी डिजिटल हस्ताक्षर के रखा जाता है.

3) इलेक्ट्रॉनिक पेमेंट एडवाइस

1. पीपीए की कमियों को दूर करने और पीपीए के भौतिक कागज आधारित प्राधिकरण को डिजिटल रूप में करने वाली एजेंसियों के सुचारू परिवर्तन के लिए, पीएफएमएस में

एक नया भुगतान मोड 'इलेक्ट्रॉनिक भुगतान सलाह (ईपीए)' शुरू किया गया.

2. ईपीए के तहत, एजेंसी को कॉर्पोरेट इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से फाइल को मंजूरी देने का विकल्प मिलता है और शाखा में जाये बिना भुगतान हो जाता है .

पीएफएमएस ने हमारे बैंक को विभिन्न भुगतानों की बैंक के सन्दर्भ में पेंडिंग स्थिति देखने के लिए एक डैशबोर्ड दिया हुआ है जिसका एक्सेस सेंट्रल ऑफिस की टीम के पास है. यह डैशबोर्ड सामान्यत: एक दिन पहले तक का अपडेट रहता है.

केंद्र सरकार, केंद्र सरकार के पीएसयू, राज्य सरकार के पीएसयू, वैधानिक निकाय, स्थानीय निकाय, ट्रस्ट, पंजीकृत सोसाइटियां, राज्य सरकार के संस्थान पीएफएमएस के आरईएटी (रसीदें, व्यय, अग्रिम और हस्तांतरण) मॉड्यूल का उपयोग करके अपने भुगतान संसाधित करने के लिए हमारे बैंक की किसी भी शाखा में अपना खाता खोल सकती हैं. हमारा सिस्टम सभी प्रमुख योजना प्रकारों यानी आरईएटी (REAT), एन आर ई जी ए (NREGA), पीएमकिसन (PMKISAN), पी ए एच ए एल (PAHAL) इत्यादि का समर्थन करता है. हमारा CBS सिस्टम पीएफएमएस के साथ e-GramSwaraj सॉफ़्टवेयर के एकीकरण के माध्यम से पूरे भारत में विभिन्न ग्राम पंचायतों/पंचायती राज संस्थानों के भुगतान की बड़ी मात्रा को सफलतापूर्वक संभाल रहा है. एक प्रायोजक (Sponsor Bank) के साथ-साथ एक गंतव्य बैंक (Destination Bank) होने के नाते, हमारा बैंक एजेंसी खाते खोल सकता है, पीएफएमएस के माध्यम से भुगतान की प्रक्रिया कर सकता है और मंत्रालय द्वारा निर्धारित समय-सीमा में लाभार्थियों के खातों में क्रेडिट प्रदान कर सकता है.

हमारा बैंक निम्नलिखित 4 मंत्रालयों और दो स्वायत्त निकायों (Autonomous Bodies) से मान्यता प्राप्त बैंक (accredited banker) है और इनके विभिन्न भुगतानों का निपटान पीएफएमएस के माध्यम से सफलतापूर्वक कर रहा है -

1. वाणिज्य मंत्रालय
2. उपभोक्ता मामले मंत्रालय
3. वस्त्र मंत्रालय
4. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय
5. उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT)
6. विदेश व्यापार महानिदेशालय (DGFT)

हमारे बैंक द्वारा तैयार एक्सटर्नल सिस्टम

2021 में डिपार्टमेंट ऑफ़ एक्सपेंडीचर द्वारा जारी दिशा निर्देशों का पालन करते हुए हमारे बैंक ने Digi FMS के नाम से एक एक्सटर्नल सिस्टम लांच किया था जोकि एक वेब बेस्ड पोर्टल है और हमारे सीबीएस तथा पीएफएमएस के साथ एकीकृत है .

इस पोर्टल का मुख्य उद्देश्य यह है कि यह विभागों, कार्यान्वयन एजेंसियों और पीएफएमएस के बीच एक मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है और एसएनए (एकल नोडल एजेंसियां), सीएनए (केंद्रीय नोडल एजेंसियां) आईए (कार्यान्वयन एजेंसियां) खातों, भुगतान प्रसंस्करण और एमआईएस आदि के ऑनबोर्डिंग के उद्देश्य से बैंक के सीबीएस के साथ समन्वय करता है .

इस पोर्टल के माध्यम से एजेंसी मेकर और चेकर लॉगिन के द्वारा लाभार्थियों का विवरण बना सकती है, बजट एलोकेशन कर सकते हैं और लाभार्थी के बैंक अकाउंट सत्यापित होने के बाद पेमेंट फाइल बना सकते है और विभिन्न योजनाओं के लिए आवंटित धन की रियल टाइम ट्रैकिंग कर सकती है. एजेंसी को Digi FMS में ऑनबोर्ड होने से पहले इस आशय की सूचना पीएफएमएस को दे कर अपने पसंदीदा मॉडल के द्वारा पेमेंट करने की अनुमति लेनी होती है जिसके बाद सेंट्रल ऑफिस में स्थित Digi FMS की टीम एजेंसी ऑनबोर्डिंग की प्रकिया चालू करती है.

जीजी एफएमएस की अन्य विशेषताएं:

1. एसएनए और आईए खातों में शेष राशि उपलब्धता.
2. प्रत्येक आईए खाते को सौंपी गई अंतिम डीपी सीमा (Drawing power limit) और डेबिट के लिए उपलब्ध वर्तमान डीपी.
3. ऑफसेट प्रविष्टियों सहित चयनित तिथि-सीमा के लिए SNA Deewj IA खातों में सभी वित्तीय लेनदेन.
4. चयनित तिथि-सीमा के लिए पीएफएमएस लेनदेन का खाता-वार सारांश.
5. अनुमोदन हेतु लंबित डीएससी प्रमाणपत्र/पीपीए.
6. पीए
7. फएमएस बैचों और लेनदेन पर रिपोर्ट.
8. लाभार्थी स्तर के रिकॉर्ड के साथ एफटीओ जांच.
9. उपलब्ध रिपोर्ट को पीडीएफ, एक्सेल और सीएसवी में भी डाउनलोड करने की सुविधा.

एकल नोडल खाता, केंद्रीय नोडल खाता और राजकोट एकल खाता, खातों के माध्यम से होने वाले धन के प्रवाह से सम्बंधित से PFMS/ DoE द्वारा जारी विभिन्न दिशा निर्देश उनकी वेबसाइट पर जाकर या नीचे दिए लिंक से प्राप्त किये जा सकते हैं-

1. https://pfms.nic.in/SitePages/OrdersCirculars.aspx
2. https://doe.gov.in/public-finance-state-pfms-cna-sna
3. https://cga.nic.in/Page/Treasury-Single-Account-TSA-.aspx

नेहा अग्रवाल
वरिष्ठ प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय दिल्ली

"अदावाकृत खातों का सक्रियकरण"

बैंक खाता: बैंक खाता बैंको के द्वारा प्रदान किया गया एक वित्तीय खाता होता है जिसमें ग्राहक और बैंक के बीच सारी लेन-देन की प्रक्रिया दर्ज होती है . बैंक खाता ही वह माध्यम है जिसके द्वारा बैंक लोगों को अपने से जोड़ता है. किसी बैंक के द्वारा दी जाने वाली सेवाओं का लाभ उठाने के लिए ग्राहक का बैंक खाता होना जरूरी है. प्रत्येक बैंक अपने द्वारा प्रदान कराये जाने वाले खाते के लिए कुछ नियम व शर्त निर्धारित करता है उसी के आधार पर बैंक खातों को कई भागों में बाँटा जाता है, उनमें मुख्य हैं -

1. बचत खाता
2. चालू खाता

तो आइए अब हम खाते के इन दो प्रकार के बारे में जानते हैं-

- **बचत खाता :**

  जैसा कि नाम से ही पता चलता है, यह खाते पैसों की बचत करने के लिए खुलवाये जाते हैं . यह देश के सामान्य नागरिकों के लिए होता है जिसे किसी भी सरकारी या निजी बैंक मे न्यूनतम धनराशि जमा करके खुलवाया जा सकता है. बचत खाता में बैंको द्वारा खाताधारको को जमा धनराशि के अनुसार कुछ ब्याज प्रदान किया जाता है. इस प्रकार के खाते के माध्यम से ग्राहक किसी भी समय कितनी भी धनराशि को जमा कर सकता है या निकाल सकता है जिसके लिए विभिन्न बैंको द्वारा फॉर्म, जमा पर्ची, चेक और एटीएम कार्ड आदि की सुविधा प्रदान की जाती है. इसके अलावा बचत खाता में जमा धनराशि के अनुसार बैंक समय-समय पर ब्याज दर में बदलाव भी करते रहती है . अधिकांश बैंकों के नियमानुसार ग्राहक द्वारा बचत खाते में कुछ न्यूनतम शेष धनराशि को बनाए रखना अनिवार्य होता है.

- **चालू खाता**

  चालू खाता बैंक का वह खाता होता है जिसके माध्यम से धनराशि के लेनदेन संबंधी सभी कार्य किए जाते हैं. चालू खाता को खुला खाता एवं ट्रांजैक्शन अकाउंट के नाम से भी जाना जाता है. चालू खाते के माध्यम से देश की बड़ी-बड़ी कंपनियां, संस्थान, विश्वविद्यालय, अस्पाताल, स्कूल आदि भुगतान से संबंधित सभी कार्य करते हैं . बैंकों मे मौजूद चालू खाता किसी भी खाताधारक को उसकी जमा राशि के अनुरूप किसी भी प्रकार का ब्याज नहीं देता है बल्कि इस प्रकार के खाते में स्वयं खाताधारक ही बैंक को एक निश्चित धनराशि का भुगतान करता है. साधारण शब्दों में कहा जाए तो चालू खाता न तो निवेश के उद्देश्य से कार्य करता न ही बचत खाते की तरह. इन खातों की धनराशि पर किसी प्रकार का ब्याज नहीं मिलता है.

ऊपर हमने खातों के बारे में विस्तार में जाना, अब आइए हम यह जानते है कि इन खातो का इस्तेमाल न होने पर खातों का क्या होता है -

आरबीआई की अधिसूचना के अनुसार, अगर किसी भी बचत या चालू बैंक खाते में दो साल तक लेन-देन नहीं होता है तो ऐसे खातों को बैंक निक्रिय खातो की श्रेणी में डाल देता है . लेनदेन का मतलब यह है कि आप ऑनलाइन लॉगइन करे या एटीएम से पैसा निकाले यदि आप इन दोनों में से कुछ भी करते हैं फिर तो खाता चालू रहेगा, पर उपरोक्त किसी भी तरीके से आप पैसे का लेन-देन नहीं करते हैं तो खाता निष्क्रय हो जाता है. एक निष्क्रिय खाते में न तो आप पैसा जमा कर सकते हैं और न ही निकाल सकते हैं. यहाँ तक कि आपके सारे डिजिटल लेनदेन के माध्यम जैसे यूपीआई, आरटीजीएस, एनईएफटी और आईएमपीएस भी इसमें काम नहीं करते.

जैसा कि हमने जाना कि आरबीआई की अधिसूचना के अनुसार दो साल तक खाते में कोई लेन-देन न होने पर बैंक उस खाते को निष्क्रिय की श्रेणी में डाल देती है, पर वैसे खाते जिनमें लेन-देन न करने की अवधी दो साल से बढ़कर दस साल तक हो जाती है उन खातों का क्या होता है? तो आइए अब हम उन खातों के बारे में जानते हैं -

यदि किसी खाते में दस साल या उससे अधिक समय तक कोई गतिविधि नहीं हो जैसे कि धन जमा करना या धन की निकासी

करना आदि, तो बैंक उन खातों को अदावाकृत खाता घोषित कर देता है अर्थात, इन खातों का दावा करने वाला कोई नहीं है. इन अदावाकृत खातो में पड़े पैसो को बैंको द्वारा DEAF (Depositor Education & Awarness Fund) को अंतरित किया जाता है जिसका संचालन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किया जाता है. बैंको में हर साल अदावाकृत राशि में बढ़ोतरी हो रही है. वित्त वर्ष 2021 में यह राशि 39264 करोड़ रुपये थी. वित्त वर्ष 2019 के अंत तक बैंकों में यह आंकडा 18380 करोड़ रुपये था. फरवरी 2023 की आरबीआई की रिपोर्ट के अनुसार बैंको के 10.24 करोड़ खातों में 35012 करोड़ रुपये जमा थे, जिनका विवरण कुछ इस प्रकार है

बैंक का नाम	अदावाकृत खातों में राशि (करोड में)
भारतीय स्टेट बैंक	₹ 8086/-
पंजाब नेशनल बैंक	₹ 5340/-
बैंक ऑफ बड़ौदा	₹ 4558/-
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया	₹ 3904/-
बैंक ऑफ इंडिया	₹ 3177/-
इंडियन बैंक	₹ 2455/-
इंडियन ओवरसीज बैंक	₹ 1790/-
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया	₹ 1240/-
बैंक ऑफ महाराष्ट्र	₹ 838/-
यूको बैंक	₹ 583/-
पंजाब एंड सिंध बैंक	₹ 494/-

अभी तक हमने बैंक खातों, उनके निष्क्रियकरण, अदावाकृत खातों के बारे में विस्तार से जाना, अब आइए हम अदावाकृत खातों के सक्रियकरण और इसके सक्रियकरण के लिए आरबीआई द्वारा चलाए गए अभियान के बारे मे जानते हैं -

बहुत सारे लोगो के मन में यह शंका रहती है कि अगर हमारा खाता निष्क्रिय अवस्था में चला गया है तो वह पुन: सक्रिय नहीं होगा जिसके कारण वे उस खाते को छोड़ देते हैं और वह खाता अदावाकृत खाते की श्रेणी मे चला जाता है पर निष्क्रिय खातों को पुन: चालू किया जा सकता है, लेकिन सामान्य तौर पर जो नियम है उसके मुताबिक आपको अपने बैंक की शाखा में जाना होगा और एक पत्र बैंक को देना होगा जिसमें वही हस्ताक्षर हो जो खाते में है. इस पत्र के साथ आपको केवाईसी भी करवाना होगा जिसमें आपको एक पते का सबूत और पहचान पत्र देना होगा जिस पर आपका हस्ताक्षर होगा. खाता सक्रिय होने के तुरंत बाद आपके कोई लेन-देन करना होंगे. यानी या तो पैसा जमा करना होगा या निकालना होगा, यह रकम 100 रुपये भी हो सकती है. इस प्रक्रिया से आप अपने अदावाकृत खातो को भी सक्रिय करवा सकते हैं जो की बिल्कुल आसान है.

आदावाकृत खाता के सक्रियकरण के लिए आरबीआई द्वारा शुरू किया गया अभियान

100 डेज 100 पे

1 जून 2023 से रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के द्वारा एक विशेष अभियान शुरू किया गया, जिसका नाम ''100 डेज 100 पे'' था और इस अभियान से उन लोगो को खास फायदा हुआ, जिनका अपना या अपने किसी रिश्तेदार का कोई पुराना बैंक अकाउंट पड़ा हुआ था जिसमें उनके पैसे सालों से पड़े हुए थे.

इस विशेष अभियान का मकसद बैंको मे पड़े टॉप 100 अदावाकृत खाताधारकों का पता लगाना और उसका निदान करना था. इसके दायरे में 100 जिलो के हर बैंक आए. इस 100 दिन के अभियान से आरबीआई की आदावाकृत खातो की संख्या में कमी लाने में मदद मिली. इसके लिए आरबीआई द्वारा एक सेंट्रलाइज्ड पोर्टल तैयार किया गया जिससे जमाकर्ता और लाभार्थी अलग- अलग बैंकों में पड़ी बिना दावे वाली जमा राशि के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते थे.

यहाँ पर हमने खातो के प्रकार, अदावाकृत खाते, निष्क्रिय खाते के बारे में जाना और यह भी जाना की अदावाकृत खाता को सक्रिय करना कितना आसान है और बैंक द्वारा इसके सक्रियकरण की प्रक्रिया में कोई भी अतिरिक्त शुल्क नहीं ली जाती है. इन सभी जनकारियों से हम इस निष्कर्ष पर आए कि अदावाकृत खातों को सक्रिय करना व्यक्ति के लिए वित्तीय सुरक्षा और सुविधाओं के लिए आवश्यक है. खाताधारकों को नियमित रूप से खाते का इस्तेमाल करना चाहिए ताकि उन्हें वित्तीय समृद्धि प्राप्त करने में मदद मिल सके.

सोनल कुमार सिन्हा
ग्राहक सेवा सहयोगी
क्षेत्रीय कार्यालय, रांची

जांस्कर मोहब्बत है

हाँ!! ये सच है..जांस्कर मोहब्बत है लेकिन वो पहली नज़र वाली नहीं.. वो, जो धीरे-धीरे होती है..वो जो वक़्त के साथ परवान चढ़ती है.. वो, जो पहली मुलाक़ात के बाद रात-रात भर बेचैन नहीं करती.. वो, जो अपनी गैर-मौजूदगी में ''समथिंग मिसिंग'' होने का अहसास करवाती है पर क्या मिसिंग है..ये कभी पता नहीं चलने देती है.

जांस्कर मिश्री की डली जैसा है जो हौले-हौले दिल-दिमाग में घुलता है..और ये जब हौले-हौले दिल-दिमाग में स्वाद चढ़ता है न फ़िर वो आसानी से उतरता नहीं.. उस मिठास से भले ही चाहने वाले को डायबिटीज क्यों न हो जाएँ..

मोहब्बत भले ही यहाँ से धीरे-धीरे हो लेकिन शामें यहाँ अचानक से होती हैं..जाने कौन सी जल्दी में रहती हैं यहाँ की शामें..अभी स्वर्णिम सी आभा लिए सामने और अभी पलक झपकते ही एकदम से उड़नछू..शायद किसी से मिलने की आतुरता इनको भी होती होगी जैसे इनसे मिलने के लिए हमें होती है..

नदियों का फिरोज़ीपन उन्हें स्वर्ग से उतरी हुई अप्सरा सरीख़ा सजीला बनाता है.. होता है कोई-कोई इतना खूबसूरत जिससे नज़र ही नहीं हटती.. यहाँ की करग्याक, शरप, डोडा हमें उतनी ही खूबसूरत लगती हैं.. देखा है कभी दिन के पहर के हिसाब से रंग बदलते हुए किसी नदी को..शरप थोड़ी-थोड़ी वैसे ही रंग बदलती है..होगा इसको भी प्रेम सूरज की किरणों से तभी तो पहर-पहर नखरे दिखाती है..

यहाँ नदियाँ भले ही तंग घाटियों से गुजरती हैं लेकिन इनकी चंचलता और खिलंदड़पन पूरा जांस्कर महसूस करता है..कभी पास जाकर देखिएगा.. उछल कर आपको डरा न दें तो कहिये..

पता है नदियों के इस खिलंदड़पने में उनका संगी कौन है..वही मनमौजी हवा, जो एक क्षण के लिए भी हमें सुकून से एक जगह टिकने नहीं देती.. शुष्क इतनी कि हर दस मिनट में आपके नाक-गला सुखा दे और चंचल इतनी कि बालों में पेंग मार-मारकर मजबूर कर दे उसे दुपट्टे से बखूबी कैद करने के लिए.. लेकिन यही हवा जब मटर के हरे खेतों के बीच से गुजरती है न तो विरह की अजीब सी धुन बजती है जैसे सदियों से इंतजार है किसी के आने का..

बेरंगे पहाड़ खुद चाहे जितने उदास दिखते हों लेकिन आपकी जिंदगी को सतरंगा करके वापस भेजते हैं..जैसे पिताओं ने अपनी बेटियों का आँचल हमेशा दुआओं से भरा है न बिल्कुल वैसी ही दुआएं एक आवाज़ देने पर इन आसमान तक ऊँचे पहाड़ों से वापस आती हैं.

ऊपर नीला चटक आसमान, नीचे बलखाकर चलती फिरोज़ी नदी और दूर तक विस्तृत धरा, बीच-बीच में अपनी मौज में उग आए रंग-बिरंगे फूलों की एक बड़ी सी कालीन, क्षितिज से आती प्रार्थना चक्र की घंटियों की आवाज़ और अपनी ही धुन में मगन जांस्कारी लोग..क्या मोहब्बत करने के लिए कुछ और भी चाहिए इस जिन्दगी में.....

प्रज्ञा सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून

कृत्रिम बुद्धिमत्ता: भविष्य की दिशा में एक कदम

परिचय:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence - AI) वर्तमान समय में तकनीकी क्षेत्र की सबसे चर्चित और प्रभावी अवधारणाओं में से एक है. यह तकनीक इंसानों की तरह सोचने, समझने और कार्य करने वाली मशीनों या कंप्यूटर प्रणालियों के निर्माण से संबंधित है. AI का उद्देश्य उन प्रक्रियाओं को स्वचालित बनाना है जिनके लिए आमतौर पर मानव बुद्धि की आवश्यकता होती है, जैसे कि भाषा समझना, समस्या हल करना, निर्णय लेना और सीखना. आज की दुनिया में AI ने उद्योग, शिक्षा, चिकित्सा, बैंकिंग, और यहाँ तक कि हमारे दैनिक जीवन में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी शुरू कर दी है.

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इतिहास और विकास:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का इतिहास बहुत पुराना नहीं है, लेकिन इसका महत्व समय के साथ तेजी से बढ़ा है. 1950 के दशक में एलन ट्यूरिंग ने पहली बार यह सवाल उठाया कि क्या मशीनें सोच सकती हैं. उनके इस सवाल नें ने की नींव रखी. उन्होंने एक ''ट्यूरिंग टेस्ट'' का प्रस्ताव रखा, जो यह निर्धारित करने का एक तरीका था कि क्या कोई मशीन मानव की तरह व्यवहार कर सकती है.

1956 में, जॉन मैकार्थी ने पहली बार ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता'' शब्द का प्रयोग किया और डार्टमाउथ सम्मेलन में इस क्षेत्र की शुरुआत की. इसके बाद, एआई ने कई महत्वपूर्ण चरणों को पार किया, जिनमें विशेषज्ञ प्रणालियों का विकास, मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग का उभार शामिल है. आज यह मशीनों को न केवल स्वचालित प्रक्रियाएँ सिखा सकता है, बल्कि उन्हें सीखने और अपने अनुभवों से सुधार करने में भी सक्षम बनाता है.

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रकार:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता को मुख्य रूप से तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

1. **नैरो एआई (Narrow AI):** इसे कमजोर AI भी कहा जाता है. यह किसी एक विशिष्ट कार्य के लिए डिज़ाइन किया गया होता है. उदाहरण के लिए, चेहरा पहचानने वाले सॉफ़्टवेयर या वर्चुअल असिस्टेंट्स (जैसे सिरी, गूगल असिस्टेंट) नैरो एआई का ही एक रूप हैं.
2. **जनरल AI (General AI):** इसे मजबूत एआई कहा जाता है. यह उस AI को संदर्भित करता है जो किसी भी कार्य को मानव की तरह कर सके. यह तकनीक अभी पूरी तरह से विकसित नहीं हुई है, लेकिन इसके लिए रिसर्च चल रही है.
3. **सुपरइंटेलिजेंस (Superintelligence):** यह एआई का वह चरण है जब मशीनें मानव बुद्धि से कहीं अधिक बुद्धिमान हो जाएंगी. यह भविष्य का एक विचार है और इस पर आधारित कई नैतिक और दार्शनिक चर्चाएँ होती रही हैं.

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में प्रगति:

वर्तमान समय में, एआई ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी जगह बना ली है और इन क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव ला रही है:

1. **स्वास्थ्य सेवा:** एआई के आगमन ने चिकित्सा के क्षेत्र में बड़े बदलाव किए हैं. एआई आधारित सिस्टम्स रोगों का प्रारंभिक निदान करने, रोगियों के डेटा का विश्लेषण करने और व्यक्तिगत इलाज योजनाओं को बनाने में सक्षम हैं. यह तकनीक डॉक्टरों को सही निर्णय लेने में मदद करती है और मरीजों के इलाज को तेज़ और सटीक बनाती है.
2. **शिक्षा:** एआई ने शिक्षा के क्षेत्र में भी नई संभावनाओं को जन्म दिया है. एआई आधारित ट्यूटर सिस्टम्स और लर्निंग प्लेटफॉर्म्स छात्रों को व्यक्तिगत ध्यान देने और उनकी समझ को बेहतर बनाने में मदद करते हैं. साथ ही, यह शिक्षकों को उनके छात्रों की प्रगति का बेहतर मूल्यांकन करने में मदद करता है.
3. **उद्योग और व्यवसाय:** एआई ने उत्पादन और संचालन के क्षेत्र में भी क्रांति ला दी है. एआई आधारित रोबोट्स और स्वचालित मशीनें उन कार्यों को तेजी से और सटीकता के साथ कर सकती हैं जिन्हें करने में मनुष्यों को अधिक समय लगता है. इससे उत्पादन लागत में कमी और उत्पादकता में वृद्धि होती है.
4. **वित्तीय सेवाएँ:** बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं में एआई का उपयोग जोखिम प्रबंधन, धोखाधड़ी का पता लगाने, और ग्राहक सेवा में सुधार के लिए किया जा रहा है. एआई आधारित चैटबॉट्स ग्राहकों की समस्याओं का समाधान तेजी से और बिना मानवीय हस्तक्षेप के कर सकते हैं. साथ ही,

एआई वित्तीय बाजारों में निवेश की संभावनाओं का पूर्वानुमान लगाने में भी सहायक है.

5. **स्वचालित वाहन:** एआई की मदद से स्वचालित वाहनों का विकास हो रहा है. ये वाहन बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के सड़कों पर चल सकते हैं, जिससे सड़क दुर्घटनाओं में कमी और परिवहन के अनुभव में सुधार हो सकता है.

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लाभ:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कई लाभ हैं जो इसे आधुनिक समय में अत्यधिक महत्वपूर्ण बनाते हैं:

1. **प्रदर्शन और दक्षता में वृद्धि:** एआई आधारित सिस्टम्स मानवों की तुलना में अधिक सटीकता और गति से कार्य कर सकते हैं. इससे उत्पादकता में वृद्धि होती है और कार्यों को तेजी से पूरा किया जा सकता है.
2. **जोखिम में कमी:** एआई का उपयोग खतरनाक और जोखिमपूर्ण कार्यों में किया जा सकता है, जैसे कि खनन, अंतरिक्ष अनुसंधान, और परमाणु ऊर्जा संयंत्रों में संचालन. इससे मानव जीवन को जोखिम से बचाया जा सकता है.
3. **व्यक्तिगत अनुभव:** एआई का उपयोग उपभोक्ताओं के व्यक्तिगत अनुभवों को बेहतर बनाने के लिए भी किया जा रहा है. जैसे, ऑनलाइन शॉपिंग वेबसाइट्स पर एआई आधारित अनुशंसा प्रणालियाँ उपयोगकर्ताओं के पिछले खरीदारी व्यवहार के आधार पर उत्पादों की सिफारिश करती हैं.

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नुकसान और चुनौतियाँ:

एआई के कई लाभ होने के बावजूद, इसके साथ कुछ चुनौतियाँ और जोखिम भी जुड़े हुए हैं:

1. **नौकरी छिनना:** एआई के विकास से मानव श्रमिकों की नौकरियाँ खतरे में आ सकती हैं, क्योंकि स्वचालन की वजह से मानव श्रम की आवश्यकता कम हो रही है. विशेष रूप से उत्पादन और सेवा क्षेत्रों में यह एक प्रमुख चिंता का विषय है.
2. **नैतिक और सामाजिक प्रश्न:** एआई के उपयोग से जुड़ी नैतिक और सामाजिक समस्याएँ भी सामने आ रही हैं. एआई आधारित स्वचालित हथियारों और निगरानी प्रणालियों का दुरुपयोग किया जा सकता है, जिससे समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है.
3. **गोपनीयता और सुरक्षा:** एआई के उपयोग से डेटा गोपनीयता और सुरक्षा के मुद्दे भी उत्पन्न हो रहे हैं. एआई आधारित सिस्टम्स द्वारा बड़े पैमाने पर व्यक्तिगत डेटा का संग्रहण किया जाता है, जिससे डेटा लीक और साइबर हमलों का खतरा बढ़ जाता है.

कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक ऐसी तकनीक है जो आने वाले समय में दुनिया को पूरी तरह से बदल सकती है. इसके लाभों को देखते हुए, यह स्पष्ट है कि एआई मानव जीवन को अधिक सशक्त, सुरक्षित और सुविधाजनक बना सकता है. हालांकि, इसके साथ आने वाली चुनौतियों और जोखिमों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. यह महत्वपूर्ण है कि एआई के विकास और उपयोग के समय नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारियों का ध्यान रखा जाए. सही दिशा और नियंत्रण के साथ, कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारे भविष्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकती है.

दीपिका गुप्ता
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा

राजभाषा नियम 1976 के अनुसार सभी कार्यालयों के सभी रजिस्टरों एवं फाइलों पर द्विभाषिक (हिन्दी-भाषिक) शीर्षक लिखना अनिवार्य है.

भाषायी 'क' एवं 'ख' क्षेत्रों को भेजे जाने वाले डाक लिफाफों पर हिन्दी में पते लिखवाए जाने चाहिए.

राजभाषा नियम 1976 के नियम 5 के अनुसार अंग्रेजी में लिखे किन्तु हिन्दी में हस्ताक्षरित, प्राप्त पत्र का उत्तर हिन्दी में दिया जाना अनिवार्य है.

अप्पम

सामग्री : 2 कप रवा (सूजी), ½ कप नारियल , थोड़े से ड्रायफ्रुट (काजू, बदाम, पिस्ता), घी, 1 कप शक्कर

विधि : सूजी को रात में एक बर्तन में डालकर भिगाकर रखे. नारीयल को किस कर उसका रस निकाकर सूजी में डालकर अच्छे से मिला लें. ड्रायफुट बारीक काटकर मिला लें. शक्कर मिला लें. सभी को अच्छे से फेंट ले और थोडी देर के लिए अलग से रख लें. अप्पम का बर्तन ले लें और उसे गैस पर धीमी आँच पर रख लें. थोडा सा गर्म होने पर उसमें सामग्री जो घोलकर रखी है वह थोडा थोडा डाल दें और उपर एक थाली से ढककर रख दें. 5-10 मीनट पकने दें. फिर निकालकर कर परोस दें.

मल्टी विटामिन ढोकला

सामग्री : मल्टी ग्रेन आटा या पाँच तरह के दालें , नमक स्वादानुसार, राई, जिरा, सफेद तिल, हरि मिर्च, हरि धनिया, हलदी

विधि : यह ढोकला एक अलग तरीके से बनाना है. जो सेहत के लिए बहुत ही अच्छा है. इसके लिए हमें हमारे घर अगर मल्टी पर्पज आटा है, उसे लेना है या पाँच तरह की दालें लेकर उसे रात में भिगो कर रखना है. सुबह मिक्सर में पिस लेना है. पिसे हुए मिक्चर को एक बाउल में निकालकर उसमें नमक तथा हल्दी मिला लें. एक थाली लेकर उसमें तेल लगाकर इस मिक्चर को उसमें डालकर स्टीम करना है. स्टीम हो जाने पर उसे थाली में छोटे छोटे टुकड़े कर रखना है और ऊपर से उसे राई, जीरा तथा सफेद तिल, हरी मिर्च तथा हरा धनिया डाकलर बघार करना है. बस अब यह ढोकला खाने के लिए तैयार है.

सुश्री मीना भडेकर
सर एसपीबीटी महाविद्यालय

महिला नेतृत्व

दुनिया के किसी भी देश में महिलाओं की नीतियों को निर्धारित करने, संसाधनों को आवंटित करने, कंपनियों का नेतृत्व करने या बाज़ारों को आकार देने में समान भूमिका नहीं है. कई देशों में, पहले से कहीं ज़्यादा महिलाएँ काम कर रही हैं, लेकिन अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में, वे उतना नहीं कमा रही हैं, उतनी ऊँचाई तक नहीं पहुँच पा रही हैं, या उन्हें काम पर, घर पर या समुदाय में समान आवाज़ नहीं मिल पा रही है. दुनिया की आधी प्रतिभा का दोहन नहीं हो पाया है, और हम लैंगिक समानता या किसी भी अन्य मुद्दे पर तब तक प्रगति नहीं कर सकते हैं जब तक कि महिलाएँ अपनी पूरी क्षमता हासिल नहीं कर लेती हैं. स्वास्थ्य सेवा और व्यवसाय से लेकर सार्वजनिक कार्यालय और न्यायालयों तक, महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम है और उन्हें कम महत्व दिया जाता है. महिला नेतृत्व का विषय आज के समय में बेहद महत्वपूर्ण है. महिलाओं की भूमिका न केवल व्यक्तिगत विकास में बल्कि समाज, अर्थव्यवस्था, और राजनीति में भी महत्वपूर्ण है.

महिला नेतृत्व की भूमिका:

- **समाज में परिवर्तन:** महिलाएं समाज में बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं. वे अपनी आवाज उठाकर और नेतृत्व करके सामाजिक नीतियों में सुधार कर सकती हैं.
- **अर्थव्यवस्था में योगदान:** महिलाओं का सक्रिय नेतृत्व आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है. जब महिलाएं नेतृत्व की भूमिकाओं में होती हैं, तो वे नई दृष्टिकोण और नवाचार लाती हैं, जिससे उत्पादकता और विकास में वृद्धि होती है.
- **राजनीतिक भागीदारी:** महिला नेताओं की भागीदारी राजनीतिक प्रक्रिया को अधिक समावेशी और प्रतिनिधित्वकारी बनाती है. इससे नीतियों में महिलाओं के अधिकारों और हितों को प्राथमिकता दी जाती है.
- **प्रेरणा का स्रोत:** महिलाएं अगली पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनती हैं. उनके नेतृत्व से अन्य महिलाएं भी आत्मविश्वास के साथ अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने के लिए प्रोत्साहित होती हैं.
- **सकारात्मक बदलाव की संचालक:** महिलाओं के नेतृत्व में सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन, जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, और पर्यावरण संरक्षण, को बढ़ावा दिया जा सकता है.

महिला नेतृत्व की भूमिका के आयाम कई महत्वपूर्ण पहलुओं में बंटे हुए हैं:

- **शिक्षा और जागरूकता:** महिला नेतृत्व को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा की आवश्यकता है. शिक्षित महिलाएं न केवल अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं, बल्कि वे समाज में भी सकारात्मक बदलाव लाने में सक्षम होती हैं. भारत को विशेष रूप से विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के लिये शिक्षा में निवेश और पहुँच बढ़ाने पर ज़ोर देना चाहिये.
- **आर्थिक स्वतंत्रता:** महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए कौशल विकास और रोजगार के अवसर प्रदान करना आवश्यक है. इससे वे निर्णय लेने की स्थिति में आती हैं और अपने विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सकती हैं.
- **अदृश्य काम को पहचानना:** घरेलू कार्यों की पहचान एवं उन्हें मान्यता देकर अर्थव्यवस्था और सामाजिक सुरक्षा में निवेश करने तथा सकल घरेलू उत्पाद को फिर से परिभाषित करने की आवश्यकता है.
- **राजनीतिक भागीदारी:** महिला नेतृत्व में राजनीतिक प्रतिनिधित्व महत्वपूर्ण है. जब महिलाएं राजनीति में सक्रिय होती हैं, तो वे नीतियों और कार्यक्रमों में महिला दृष्टिकोण को शामिल कर सकती हैं.
- **सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव:** महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार लाने के लिए सांस्कृतिक बदलाव आवश्यक हैं. यह लिंग आधारित भेदभाव को समाप्त करने में मदद करता है और महिलाओं को नेतृत्व में बढ़ने का अवसर देता है.
- **जलवायु और खाद्य सुरक्षा में महिलाओं की भूमिका:** भारत को जलवायु संबंधी लचीलेपन के साथ पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में महिलाओं की भागीदारी के महत्त्व पर प्रकाश डालना चाहिये. जलवायु परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा और पोषण से निपटने में महिलाओं की भूमिका को पहचानना और बढ़ावा देना.
- **नेटवर्किंग और सहयोग:** महिलाओं के बीच नेटवर्किंग और सहयोग को बढ़ावा देने से नेतृत्व की क्षमताओं को विकसित किया जा सकता है. महिलाएं एक-दूसरे का समर्थन करके और अपने अनुभव साझा करके एक मजबूत समुदाय बना सकती हैं.
- **महिला उद्यमियों को सशक्त बनाना:** महिला उद्यमियों को बढ़ावा देने और महिलाओं के स्वामित्व वाले तथा महिलाओं के नेतृत्व वाले सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSMEs) का समर्थन करने पर लगातार ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए.

- **स्वास्थ्य और कल्याण:** महिलाओं का स्वास्थ्य और कल्याण भी नेतृत्व के आयाम में शामिल है. स्वस्थ महिलाएं बेहतर निर्णय ले सकती हैं और समाज में प्रभावी ढंग से भाग ले सकती हैं.
- **बदलती मानसिकता:** भारत में महिलाओं के नेतृत्व में विकास सुनिश्चित करने के लिये समाज की मानसिकता को बदलना आवश्यक है. महिलाओं के नेतृत्व को महत्त्व देने और उन्हें सशक्त बनाने के लिये जागरूकता का प्रसार करना और शिक्षा को बढ़ावा देना आवश्यक है.
- **महिला उद्यमियों को सशक्त बनाना:** महिला उद्यमियों को बढ़ावा देने और महिलाओं के स्वामित्व वाले तथा महिलाओं के नेतृत्व वाले सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSMEs) का समर्थन करने पर लगातार ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिये.

इन आयामों के माध्यम से, महिला नेतृत्व को सशक्त बनाना और उसे बढ़ावा देना समाज में समग्र विकास के लिए आवश्यक है. जब महिलाओं को प्रशिक्षण, रोल मॉडल, नेटवर्किंग और अन्य साधनों तक समान पहुंच मिलती है, जो परंपरागत रूप से पुरुषों के लिए डिजाइन किए गए हैं, तो उन्हें अपने करियर को गति देने और अंदर से संगठनात्मक परिवर्तन को बढ़ावा देने का अवसर मिलता है.

महिला नेतृत्व में विकास को बढ़ावा देने वाली सरकार की कुछ योजनाएं:

- महिला आरक्षण अधिनियम.
- स्टैंड-अप इंडिया.
- प्रधानमंत्री मुद्रा योजना.
- बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ.
- प्रधानमंत्री जनधन योजना.
- राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन.
- प्रधानमंत्री आवास योजना.

लेकिन महिला नेतृत्व के सामने कई चुनौतियां भी हमें देखने को मिलती है, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं:

- **लिंग आधारित पूर्वाग्रह:** महिलाएं अक्सर नेतृत्व की भूमिकाओं में लैंगिक पूर्वाग्रह का सामना करती हैं. उन्हें निर्णय लेने की क्षमता, सख्ती, और नेतृत्व के अन्य गुणों पर संदेह किया जाता है.
- **सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएं:** कई समाजों में महिलाएं पारंपरिक रूप से परिवार और घर की जिम्मेदारियों से जुड़ी होती हैं, जिससे उनके लिए नेतृत्व की भूमिकाओं में प्रवेश और संतुलन बनाना कठिन हो जाता है.
- **कार्यस्थल पर भेदभाव:** महिलाओं को कार्यस्थल पर भेदभाव का सामना करना पड़ता है, जैसे कि समान काम के लिए असमान वेतन, प्रमोशन के कम अवसर, और कड़ी निगरानी.
- **नेतृत्व के मॉडल की कमी:** कई महिलाएं नेतृत्व की भूमिकाओं में महिला आदर्शों की कमी महसूस करती हैं, जिससे उनके लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन पाना मुश्किल हो जाता है.
- **कार्य-जीवन संतुलन:** नेतृत्व की भूमिकाओं के साथ आने वाली जिम्मेदारियों के कारण महिलाएं अक्सर कार्य-जीवन संतुलन बनाए रखने में कठिनाई महसूस करती हैं, विशेष रूप से जब परिवारिक दायित्व भी होते हैं.
- **स्वयं की सीमाएं:** महिलाएं कभी-कभी स्वयं अपनी क्षमता और महत्व को कम आंकती हैं, जो कि नेतृत्व में आगे बढ़ने में बाधक हो सकता है.

इन चुनौतियों के बावजूद, महिलाएं अपने अनुभव, दृष्टिकोण और नेतृत्व शैली से सकारात्मक बदलाव ला सकती हैं, यदि उन्हें उचित समर्थन और अवसर मिलें. उनकी कुछ प्रमुख विशेषताएं भी निम्नलिखित हैं:

- **सहयोगी दृष्टिकोण:** महिलाएं अक्सर सहयोग और टीम वर्क पर जोर देती हैं. वे निर्णय लेने में टीम के अन्य सदस्यों की राय और सुझावों को महत्व देती हैं, जिससे एक समावेशी वातावरण बनता है.
- **सहानुभूति और संवेदनशीलता:** महिला नेता आमतौर पर सहानुभूति और संवेदनशीलता के साथ नेतृत्व करती हैं. वे अपने टीम के सदस्यों के व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन को समझने का प्रयास करती हैं, जिससे उनकी टीम के सदस्यों का समर्थन और प्रेरणा बढ़ती है.
- **दूरदर्शिता और रणनीतिक सोच:** महिला नेता दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ सोचती हैं और अपनी टीम के लिए स्पष्ट लक्ष्यों और योजनाओं का निर्माण करती हैं. वे चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए रणनीतिक निर्णय लेने की क्षमता रखती हैं.
- **सक्रिय संवाद:** महिलाएं संवाद में खुलापन और पारदर्शिता को प्राथमिकता देती हैं. वे अपने टीम के सदस्यों के साथ नियमित रूप से बातचीत करती हैं, जिससे टीम में विश्वास और एकजुटता बनी रहती है.
- **समस्या समाधान और निर्णायकता:** महिला नेता समस्या समाधान में कुशल होती हैं और स्थिति के अनुसार त्वरित निर्णय लेने में सक्षम होती हैं. वे चुनौतियों का सामना साहस और धैर्य के साथ करती हैं.
- **समावेशिता:** महिला नेता विविधता और समावेशिता को बढ़ावा देती हैं. वे अपनी टीम में विभिन्न पृष्ठभूमि, अनुभव और दृष्टिकोण रखने वाले लोगों को शामिल करने के लिए प्रयासरत रहती हैं.
- **संतुलन और लचीलापन:** महिला नेतृत्व में कार्य-जीवन संतुलन और लचीलापन महत्वपूर्ण होता है. वे अपनी टीम को भी इस संतुलन को बनाए रखने के लिए प्रेरित करती हैं, जिससे दीर्घकालिक सफलता सुनिश्चित होती है.

- **प्रेरणा और उत्साहवर्धन:** महिला नेता अपने टीम के सदस्यों को प्रेरित करने और उनकी क्षमता को पहचानने में माहिर होती हैं. वे अपने टीम को लगातार प्रोत्साहित करती हैं और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए काम करती हैं.

ये विशेषताएं महिला नेतृत्व को अद्वितीय और प्रभावी बनाती हैं, जिससे वे अपनी टीम और संगठन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती हैं.

निष्कर्षत: महिलाएं अपने विशिष्ट गुणों और दृष्टिकोणों के साथ नेतृत्व में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं. उनके सहयोगी, सहानुभूतिपूर्ण, और समावेशी नेतृत्व शैली न केवल संगठनों के कार्यनिष्पादन को बेहतर बनाती है, बल्कि एक समावेशी और संतुलित कार्यस्थल का निर्माण भी करती है. हालांकि, उन्हें सामाजिक, सांस्कृतिक, और संस्थागत चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, फिर भी वे इन बाधाओं को पार करते हुए अपने नेतृत्व कौशल का प्रदर्शन करती हैं. महिलाओं के नेतृत्व में संगठनों को दीर्घकालिक सफलता और सामूहिक विकास के लिए प्रेरित करने की क्षमता होती है. इसलिए, यह आवश्यक है कि समाज और संगठन महिला नेताओं को समान अवसर, समर्थन और संसाधन प्रदान करें, ताकि वे अपने नेतृत्व कौशल का पूर्ण रूप से उपयोग कर सकें और एक संतुलित और प्रगतिशील समाज का निर्माण कर सकें. जब महिलाएं नेतृत्व के पदों पर दिखाई देती हैं, तो इससे प्रभावी नेतृत्व की प्रकृति ही बदल जाती है - और गहराई से जड़ें जमाए बैठी रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों को खत्म करना शुरू हो जाता है.

श्री अर्जुन कुमार यादव
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, दरभंगा

महिला नेतृत्व का इतिहास वर्तमान एवं भविष्य

प्रस्तावना

महिला नेतृत्व का विचार भारतीय समाज में ऐतिहासिक रूप से एक महत्वपूर्ण विषय रहा है. समय के साथ, महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में अपनी जगह बना रही हैं, और नेतृत्व के पदों पर अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर रही हैं. भारतीय समाज में महिला नेतृत्व की अवधारणा न केवल आजादी के बाद बल्कि उससे पहले भी विभिन्न रूपों में देखने को मिलती है. चाहे वह राजनीति हो, साहित्य हो, सामाजिक क्षेत्र हो या विज्ञान, महिलाएं हर क्षेत्र में नेतृत्व के प्रतिमान स्थापित कर रही हैं. विशेष रूप से राजभाषा हिंदी में महिला नेतृत्व की अभिव्यक्ति एक गहन अध्ययन का विषय है, क्योंकि हिंदी न केवल एक भाषा है बल्कि भारतीय संस्कृति, परंपराओं और समाज का प्रतिबिम्ब है.

महिला नेतृत्व का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

इतिहास के पन्नों में झांके तो महिला नेतृत्व का उदाहरण प्राचीन काल से ही मिलता है. ऋग्वेद में कई महिला ऋषियों का उल्लेख मिलता है जिन्होंने उस समय समाज को दिशा देने का कार्य किया. महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों में भी महिलाओं का नेतृत्वकारी भूमिका निभाने का उल्लेख है. महारानी लक्ष्मीबाई और अहिल्याबाई होलकर जैसी वीरांगनाओं ने न केवल अपने राज्य का नेतृत्व किया, बल्कि समाज को यह संदेश दिया कि महिलाएं किसी भी दृष्टिकोण से कमजोर नहीं हैं.

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिला नेतृत्व की भूमिका असाधारण रही है. झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, सरोजिनी नायडू, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, विजयलक्ष्मी पंडित जैसी अनेक महिलाओं ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष में भाग लिया और नेतृत्व की मिसाल पेश की. स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महिलाओं ने न केवल अपने परिवार का ध्यान रखा, बल्कि उन्होंने सामूहिक रूप से देश को स्वतंत्रता की दिशा में अग्रसर किया. ये महिलाएं संघर्ष का प्रतीक थीं, जिन्होंने यह साबित किया कि नेतृत्व केवल पुरुषों तक सीमित नहीं है.

स्वतंत्रता के बाद महिला

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी महिला नेतृत्व की परंपरा बनी रही. भारतीय राजनीति में इंदिरा गांधी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है. उन्होंने न केवल भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री बनने का गौरव प्राप्त किया, बल्कि अपने नेतृत्व के बल पर वैश्विक मंच पर भी भारत को मजबूत स्थिति में खड़ा किया. उनके कार्यकाल में भारत ने कई बड़े फैसले लिए, जिनमें बैंकों का राष्ट्रीयकरण और हरित क्रांति प्रमुख थे. इंदिरा गांधी ने यह साबित किया कि महिलाएं न केवल नेतृत्व कर सकती हैं, बल्कि वे कठिन परिस्थितियों में भी निर्णय लेने की क्षमता रखती हैं.

हिंदी साहित्य में भी महिला नेतृत्व की चर्चा महत्वपूर्ण है. हिंदी साहित्य की प्रमुख रचनाकारों में महादेवी वर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान, कवयित्री मीरा और अन्य महिलाओं का नाम आता है. महादेवी वर्मा ने अपने लेखन के माध्यम से महिला स्वतंत्रता और उनकी भूमिका को मुखर किया. उनके साहित्य में महिलाओं की संवेदनाओं, संघर्षों और उनके नेतृत्वकारी गुणों का सजीव चित्रण मिलता है.

सुभद्राकुमारी चौहान की कविताओं में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका की झलक मिलती है. ''खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी'' यह पंक्ति झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के अद्वितीय साहस और नेतृत्व की मिसाल है. इन कविताओं के माध्यम से महिलाओं के नेतृत्व और उनके योगदान को साहित्य के पटल पर उकेरा गया है.

भारतीय राजनीति में महिलाओं का नेतृत्व लगातार बढ़ रहा है. हाल के वर्षों में कई राज्यों की मुख्यमंत्री महिलाएं बनीं, जिन्होंने न केवल अपने राज्य का नेतृत्व किया बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों में परिवर्तन लाने का प्रयास किया. ममता बनर्जी, जयललिता, मायावती जैसी महिलाएं अपने-अपने राज्यों में प्रमुखता से उभरकर सामने आईं और उन्होंने यह सिद्ध किया कि राजनीति में महिलाओं का स्थान न केवल महत्वपूर्ण है बल्कि वह समाज को नई दिशा देने में सक्षम हैं.

शिक्षा क्षेत्र में भी महिला नेतृत्व की भूमिका उल्लेखनीय है. भारत की पहली महिला शिक्षक सावित्रीबाई फुले ने शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष किया. उन्होंने यह दिखाया कि समाज में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए शिक्षा अत्यधिक महत्वपूर्ण है. आज के समय में शिक्षा के क्षेत्र में कई महिलाएं नेतृत्वकारी भूमिका निभा रही हैं, चाहे वह शिक्षक के रूप में हो या शिक्षण संस्थानों के प्रमुख के रूप में.

महिला नेतृत्व केवल राजनीति और साहित्य तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के अन्य क्षेत्रों में भी यह महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है. सामाजिक सुधार आंदोलनों में महिलाओं का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है. महिला सशक्तिकरण, बाल विवाह, दहेज प्रथा, महिला शिक्षा और महिला स्वास्थ्य के मुद्दों पर महिलाओं ने नेतृत्व किया और समाज को जागरूक किया. विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों (NGO) और महिला सशक्तिकरण अभियानों के माध्यम से महिलाओं ने समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य किया है.

हिंदी सिनेमा भी महिला नेतृत्व की अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण माध्यम रहा है. प्रारंभिक दौर में जहां फिल्मों में महिलाओं की भूमिका सीमित होती थी, वहीं समय के साथ बदलाव आया. आज की फिल्मों में महिलाओं को न केवल एक केंद्रीय पात्र के रूप में दिखाया जा रहा है, बल्कि उन्हें नेतृत्वकारी भूमिका में भी प्रस्तुत किया जा रहा है. 'क्वीन', 'मर्दानी', 'पिंक', 'तुम्हारी सुलु', और 'शेरनी' जैसी फिल्मों में महिलाओं का स्वतंत्र निर्णय लेने वाला, मजबूत और नेतृत्वकारी रूप दिखाया गया है.

भारतीय सेना में भी महिला नेतृत्व की भूमिका लगातार बढ़ रही है. पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं ने विभिन्न सैन्य सेवाओं में प्रवेश किया है और नेतृत्व की नई मिसालें कायम की हैं. भारतीय वायुसेना में अवनी चतुर्वेदी, भावना कांत और मोहना सिंह जैसी महिलाओं ने देश का मान बढ़ाया. भारतीय नौसेना में महिला अधिकारियों की नियुक्ति और सेना में महिलाओं को कमांडर की भूमिका में देखना यह साबित करता है कि महिला नेतृत्व भारतीय समाज के हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रहा है.

हालांकि महिला नेतृत्व का विस्तार हो रहा है, फिर भी इसके सामने कई चुनौतियां हैं. सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक अवरोध महिलाओं के नेतृत्व के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते हैं. ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और सामाजिक स्वतंत्रता के अधिकार से वंचित रखा जाता है. पारंपरिक समाज में पितृसत्ता की जड़ें गहरी हैं, जिससे महिलाओं को नेतृत्वकारी भूमिका निभाने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है. महिलाओं के प्रति भेदभाव और लैंगिक असमानता भी एक बड़ी समस्या है.

कुछ साधन महिलाओं को सशक्त बनाने की ओर

महिला नेतृत्व को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण साधन है. जब महिलाएं शिक्षित होती हैं, तो वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं और नेतृत्व की भूमिका निभाने में सक्षम बनती हैं. इसके साथ ही, सरकार और समाज दोनों को महिलाओं के लिए अनुकूल माहौल बनाना चाहिए ताकि वे स्वतंत्र रूप से निर्णय ले सकें और नेतृत्व कर सकें. महिलाओं के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक जागरूकता अभियानों की आवश्यकता है.

सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाएं जैसे 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', 'सुकन्या समृद्धि योजना', और 'महिला सशक्तिकरण अभियान' महिलाओं के विकास और उनके नेतृत्व को प्रोत्साहित करने के लिए महत्वपूर्ण कदम हैं. इन योजनाओं का उद्देश्य महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से सशक्त बनाना है ताकि वे समाज में प्रभावी नेतृत्व कर सकें.

निष्कर्ष

महिला नेतृत्व भारतीय समाज के विभिन्न आयामों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है. चाहे वह राजनीति हो, साहित्य हो, शिक्षा हो या सामाजिक सुधार आंदोलन, महिलाएं हर क्षेत्र में नेतृत्व कर रही हैं. हालांकि महिला नेतृत्व के समक्ष कई चुनौतियां हैं, फिर भी महिलाएं अपने संघर्ष और धैर्य के बल पर समाज में परिवर्तन ला रही हैं. हिंदी भाषा के माध्यम से भी महिला नेतृत्व की अभिव्यक्ति होती रही है, और यह भारतीय समाज के विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान दे रही है. भविष्य में, महिला नेतृत्व की भूमिका और भी व्यापक होगी, और महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी क्षमता का प्रदर्शन करती रहेंगी.

उदिता सिंह
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद

एक कदम स्वच्छता की ओर

स्वच्छता ही सेवा, महात्मा गांधी की विचारधारा पर आधारित एक महत्त्वपूर्ण अभियान है, जिसे 2017 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किया गया था. इस अभियान का उद्देश्य स्वच्छता को व्यक्तिगत और सामूहिक ज़िम्मेदारी के रूप में स्थापित करना है. महात्मा गांधी ने स्वच्छता को न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य बल्कि सामाजिक सुधार के लिए भी अनिवार्य माना था. उन्होंने कहा था, ''स्वच्छता स्वतंत्रता से भी अधिक महत्वपूर्ण है.'' यह विचार आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना तब था. स्वच्छता एक ऐसा मार्ग है, जिसके माध्यम से हम न केवल अपने शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर कर सकते हैं, बल्कि सामाजिक उत्थान और राष्ट्र निर्माण में भी योगदान दे सकते हैं.

स्वच्छता का महत्व सिर्फ हमारे व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं है. यह एक स्वस्थ समाज के निर्माण में भी प्रमुख भूमिका निभाता है. स्वच्छता के माध्यम से न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक स्वास्थ्य में भी सुधार होता है. जब हम स्वच्छ वातावरण में रहते हैं, तो मन की स्थिरता और शांति भी प्राप्त होती है, जो एक स्वस्थ और सकारात्मक जीवनशैली के लिए आवश्यक है. महात्मा गांधी के विचार में, ''स्वच्छता ईश्वर की ओर पहला कदम है,'' और यह सत्य हमारे जीवन को नई दिशा और ऊर्जा देने में सक्षम है.

स्वच्छता का सीधा संबंध हमारे स्वास्थ्य से है. एक स्वच्छ जीवनशैली अपनाने से हम बीमारियों से बच सकते हैं, जो गंदगी और प्रदूषण से उत्पन्न होती हैं. मलेरिया, डेंगू, हैजा और टाइफाइड जैसी बीमारियों को रोकने के लिए स्वच्छता एक प्रभावी उपाय है. उदाहरण के तौर पर, यदि हम अपने घरों और आसपास के क्षेत्रों की नियमित सफाई करें और कचरे का सही प्रबंधन करें, तो हम बीमारियों के खतरे को काफी हद तक कम कर सकते हैं. इसके अलावा, स्वच्छता अभियान के तहत ग्रामीण इलाकों में शौचालय निर्माण और स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा रही है, जिससे न केवल स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है बल्कि महिलाओं की गरिमा और सुरक्षा भी सुनिश्चित हो रही है.

स्वच्छता सिर्फ शारीरिक सफाई तक सीमित नहीं है, यह एक सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी भी है. एक स्वच्छ समाज ही एक स्वस्थ समाज की नींव रखता है. धारावी, जो कभी गंदगी और प्रदूषण का प्रतीक था, आज स्वच्छता का मॉडल बन गया है. वहां के निवासियों ने मिलकर सफाई अभियान चलाया, जिससे उनका जीवनस्तर सुधरा और उनकी सामूहिक पहचान में भी सकारात्मक बदलाव आया. ऐसे उदाहरण हमें प्रेरित करते हैं कि सामूहिक प्रयासों से बड़े बदलाव संभव हैं.

पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में भी स्वच्छता का अत्यधिक महत्व है. जब हम अपने आसपास की सफाई करते हैं और कचरे का उचित निपटान करते हैं, तो हम पर्यावरण को प्रदूषण से बचाते हैं. प्लास्टिक प्रदूषण आज एक गंभीर समस्या बन चुका है, जिसे रोकने के लिए प्लास्टिक पर प्रतिबंध और जूट व कपड़े के थैलों का उपयोग एक सकारात्मक कदम है. महाराष्ट्र

और उत्तराखंड जैसे राज्यों ने प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाकर इस दिशा में सराहनीय पहल की है, जिससे न केवल पर्यावरण सुरक्षित हुआ है, बल्कि समाज में स्वच्छता के प्रति जागरूकता भी बढ़ी है.

स्वच्छता अभियान का प्रभाव ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में देखा जा सकता है. स्वच्छ भारत मिशन के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता को बढ़ावा दिया जा रहा है, जहां लोग अपने गांवों को साफ-सुथरा रखने के लिए सामूहिक प्रयास कर रहे हैं. उदाहरण के लिए, हरियाणा के मेवात जिले में स्थानीय समुदाय ने मिलकर अपने गांव को न केवल स्वच्छ बल्कि पर्यावरणीय दृष्टि से भी आदर्श बना दिया है. इसी प्रकार, शहरी क्षेत्रों में नगरपालिकाएं और नागरिक संगठन नियमित रूप से सफाई अभियान चलाकर अपने शहरों और कस्बों को स्वच्छ बना रहे हैं.

शिक्षा और जागरूकता स्वच्छता अभियान के प्रमुख स्तंभ हैं. जब बच्चों को प्रारंभ से ही स्वच्छता के महत्व के बारे में बताया जाता है, तो वे इसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा बना लेते हैं. स्कूलों में स्वच्छता से जुड़ी गतिविधियाँ, जैसे स्वच्छता रैलियाँ और प्रतियोगिताएँ, बच्चों को इस दिशा में प्रेरित करती हैं. कई स्कूलों में बच्चों को हाथ धोने और स्वच्छ आदतें अपनाने की शिक्षा दी जा रही है, जिससे वे न केवल अपने स्वास्थ्य की रक्षा कर रहे हैं बल्कि स्वच्छता के महत्व को समझ भी रहे हैं.

स्वच्छता ही सेवा का अर्थ सिर्फ व्यक्तिगत लाभ नहीं है, बल्कि यह समाज के लिए भी सेवा है. जब हम स्वच्छता को सेवा के रूप में अपनाते हैं, तो हम समाज और देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं. सफाई कर्मी, जो बिना किसी स्वार्थ के समाज की सफाई करते हैं, उनका योगदान अविस्मरणीय है. उनके अथक प्रयासों से ही हम एक स्वस्थ और स्वच्छ समाज में जीने का सपना देख सकते हैं. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है, ''जब हम स्वच्छता को सेवा का रूप देते हैं, तब हम गांधी जी के सपने को साकार करते हैं.'' यह कथन स्वच्छता के माध्यम से सामाजिक सुधार और नैतिकता की पुनर्स्थापना का प्रतीक है.

स्वच्छता ही सेवा न केवल एक सरकारी अभियान है, बल्कि यह प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है. एक स्वच्छ वातावरण में हम न केवल शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखते हैं, बल्कि समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन लाने में भी सक्षम होते हैं. स्वच्छता एक ऐसी सेवा है, जिससे समाज, पर्यावरण और आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित किया जा सकता है.

अंततः, स्वच्छता ही सेवा का मूल उद्देश्य यही है कि हम स्वच्छता को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएँ और इसे सेवा भाव से करें. जब हर व्यक्ति अपने घर, अपने आस-पास और अपने समाज को स्वच्छ रखने का प्रयास करेगा, तभी हम एक स्वस्थ, समृद्ध और उन्नत भारत की कल्पना को साकार कर पाएंगे. ''स्वच्छता से ही समृद्धि आती है,'' यह विचार हमें प्रेरित करता है कि स्वच्छता के माध्यम से हम न केवल अपनी भौतिक समृद्धि बढ़ा सकते हैं, बल्कि आंतरिक शांति और संतोष की भी प्राप्ति कर सकते हैं.

के एस एल अपर्णा
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली, दक्षिण

राजभाषा नियम 11 के अनुसार कार्यालय की सभी रबर की मुहरें हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषिक होना अनिवार्य है.

राजभाषा हिंदी में कार्य करने का जो संकल्प आपने लिया है, उसे हिंदी में अधिकाधिक कार्य करके पूर्ण करें.

राजभाषा नियम 11 के अनुसार प्रदर्शित सभी प्रकार की सूचनाएं हिंदी-अंग्रेजी होना अनिवार्य है.

जलवायु जोखिम और टिकाऊ वित्त

प्रस्तावना -

21वीं सदी में जलवायु परिवर्तन वैश्विक चुनौतियों में से एक है. इसके प्रभाव न केवल पर्यावरण पर, बल्कि आर्थिक और सामाजिक ढांचे पर भी गहरे असर डालते हैं. जलवायु जोखिम को समझना और इसका प्रबंधन करना आज की वित्तीय प्रणालियों के लिए अत्यंत आवश्यक हो गया है. इसी संदर्भ में टिकाऊ वित्त (सस्टेनेबल फाइनेंस) का महत्व उभरता है, जो न केवल पर्यावरणीय स्थिरता को प्राथमिकता देता है, बल्कि आर्थिक लाभ भी सुनिश्चित करता है. इस लेख में हम जलवायु जोखिम और टिकाऊ वित्त के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करेंगे.

जलवायु जोखिम और उसके प्रकार -

जब जलवायु परिवर्तन में नकारात्मक प्रभाव हावी होते हैं तो वे जलवायु जोखिम का सबब बनते हैं. जलवायु जोखिम के मुख्यत: तीन प्रकार होते हैं -

1. शारीरिक जोखिम
2. संक्रमण जोखिम
3. देनदारी जोखिम

1. शारीरिक जोखिम

शारीरिक जोखिम के चलते प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, सूखा और तूफ़ानों की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हो रही हैं. ये शारीरिक जोखिम न केवल मानव जीवन को ख़तरे में डालते हैं बल्कि बुनियादी ढाँचे कृषि, वित्त और उद्योगों पर भी गम्भीर असर डालते हैं. शारीरिक जोखिम के घटक निम्नलिखित हैं-

अ) **तात्कालिक शारीरिक जोखिम:** तात्कालिक शारीरिक जोखिम वे जोखिम होते हैं जो अचानक और तीव्रता से उत्पन्न होते हैं, जैसे कि चक्रवात, बाढ़, तूफान, और जंगल की आग. ये आपदाएं न केवल संपत्ति और बुनियादी ढांचे को नष्ट कर सकती हैं, बल्कि मानवीय जीवन को भी गहरा नुकसान पहुंचा सकती हैं.

आ) **क्रमिक शारीरिक जोखिम:** क्रमिक शारीरिक जोखिम वे होते हैं जो समय के साथ धीरे-धीरे उत्पन्न होते हैं, जैसे कि समुद्र के स्तर में वृद्धि, तापमान में दीर्घकालिक वृद्धि, और बदलते मौसम पैटर्न. ये जोखिम लंबे समय तक बने रहते हैं और कृषि, जल संसाधनों, और मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं.

शारीरिक जोखिम के जलवायु परिवर्तन पर पड़ने वाले प्रभाव

क) **आर्थिक प्रभाव:** शारीरिक जोखिम से उत्पन्न होने वाली प्राकृतिक आपदाएं बड़े पैमाने पर आर्थिक नुकसान का कारण बनती हैं. बाढ़ और तूफानों से बुनियादी ढांचे की क्षति, कृषि उपज का नुकसान, और उद्योगों में रुकावट आती है. इससे देशों की जीडीपी पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और वित्तीय स्थिरता को खतरा होता है.

ख) **सामाजिक प्रभाव:** शारीरिक जोखिम का सामाजिक प्रभाव भी गंभीर होता है. प्राकृतिक आपदाओं के कारण जनसंख्या विस्थापन, बेरोजगारी, और स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ जाती हैं. इससे समाज में असमानता और असुरक्षा की भावना बढ़ती है.

शारीरिक जोखिम प्रबंधन के उपाय -

च) **जोखिम आकलन और योजना:** शारीरिक जोखिमों का आकलन करना और उनके लिए उपयुक्त योजनाएं बनाना आवश्यक है. सरकारें और कंपनियां इन जोखिमों के प्रभाव को कम करने के लिए आकस्मिक योजनाएं और प्रबंधन रणनीतियाँ विकसित कर सकती हैं.

छ) **निवेश पोर्टफोलियो का विविधीकरण:** वित्तीय संस्थानों और निवेशकों को अपने निवेश पोर्टफोलियो को विविधीकृत करना चाहिए ताकि शारीरिक जोखिमों का प्रभाव कम किया जा सके. विभिन्न क्षेत्रों और परिसंपत्तियों में निवेश करके जोखिमों का फैलाव हो सकता है और संभावित नुकसान को कम किया जा सकता है.

ज) **बीमा और वित्तीय उपकरण:** बीमा कंपनियां शारीरिक जोखिमों से निपटने के लिए विभिन्न प्रकार के बीमा उत्पाद उपलब्ध करा सकती हैं. इससे आपदाओं के समय आर्थिक सुरक्षा मिलती है और नुकसान की भरपाई की जा सकती है.

शारीरिक जोखिम और टिकाऊ वित्त का संबंध - शारीरिक जोखिमों को कम करने के लिए टिकाऊ वित्त की महत्वपूर्ण भूमिका है. टिकाऊ वित्तीय साधनों जैसे हरित बॉन्ड्स, ईएसजी निवेश, और सस्टेनेबिलिटी लिंक्ड लोन का उपयोग करके इन जोखिमों का प्रबंधन किया जा सकता है. इससे न केवल पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा मिलता है, बल्कि आर्थिक लाभ भी सुनिश्चित होते हैं.

संक्रमण जोखिम: जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अपनाई जाने वाली नीतियों और प्रौद्योगिकियों के कारण संक्रमण जोखिम उत्पन्न होते हैं. इन नीतियों का उद्देश्य कार्बन उत्सर्जन को कम करना और स्वच्छ ऊर्जा की ओर संक्रमण को बढ़ावा देना होता है. इससे पारंपरिक उद्योगों और व्यवसायों को आर्थिक नुकसान हो सकता है.

संक्रमण जोखिम के घटक निम्नलिखित हैं -

अ) **नीति और कानून जोखिम:** जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने के लिए सरकारें और अंतर्राष्ट्रीय संगठन विभिन्न नीतियाँ और कानून लागू कर रही हैं. जैसे-जैसे नए नियम और मानदंड स्थापित होते हैं, कंपनियों को उन्हें अपनाने के लिए अतिरिक्त खर्च और परिचालन में बदलाव करना पड़ता है. यदि कंपनियाँ इन नीतियों का पालन नहीं करती हैं, तो उन्हें कानूनी कार्रवाइयों और जुर्मानों का सामना करना पड़ सकता है.

आ) **प्रौद्योगिकी जोखिम:** नई और स्वच्छ प्रौद्योगिकियों का विकास और उन्हें अपनाना संक्रमण के दौरान एक प्रमुख चुनौती है. पारंपरिक उद्योगों में कार्यरत कंपनियों को नई प्रौद्योगिकियों में निवेश करने और अपनी प्रक्रियाओं को अद्यतन करने की आवश्यकता होती है. यह प्रक्रिया महंगी और समय-साध्य हो सकती है, और इसमें विफलता कंपनियों को प्रतिस्पर्धा में पीछे छोड़ सकती है.

इ) **बाजार जोखिम:** जैसे-जैसे उपभोक्ता और निवेशक स्वच्छ और स्थायी उत्पादों और सेवाओं की मांग करने लगते हैं, पारंपरिक, उच्च-कार्बन उद्योगों के लिए बाजार का नुकसान होता है. इसके परिणामस्वरूप, पारंपरिक उद्योगों में निवेश का मूल्य घट सकता है और उनके उत्पादों की मांग कम हो सकती है.

संक्रमण जोखिम के जलवायु परिवर्तन पर पड़ने वाले प्रभाव

क) **आर्थिक प्रभाव:** संक्रमण जोखिम आर्थिक गतिविधियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं. जैसे-जैसे सरकारें और बाजार कम-कार्बन विकल्पों की ओर बढ़ते हैं, पारंपरिक उद्योगों को प्रतिस्पर्धा में बने रहने के लिए अतिरिक्त निवेश और लागत का सामना करना पड़ता है. इससे आर्थिक अस्थिरता और वित्तीय नुकसान हो सकता है.

ख) **सामाजिक प्रभाव:** संक्रमण जोखिम का सामाजिक प्रभाव भी महत्वपूर्ण है. पारंपरिक उद्योगों में रोजगार के अवसर घट सकते हैं, जिससे बेरोजगारी और सामाजिक असमानता बढ़ सकती है. इसके अलावा, संक्रमण के दौरान नए कौशल और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है, जिससे शिक्षा और पुन:प्रशिक्षण कार्यक्रमों की मांग बढ़ती है.

संक्रमण जोखिम प्रबंधन के उपाय -

च) **नीति और नियामक ढांचा -** सरकारें और नियामक संस्थाएँ संक्रमण जोखिमों को कम करने के लिए स्पष्ट और प्रभावी नीतियाँ और कानून स्थापित कर सकती हैं. इसका उद्देश्य व्यापार और उद्योगों को स्थिरता की ओर प्रोत्साहित करना और संक्रमण प्रक्रिया को सुचारू बनाना है.

छ) **नवाचार और प्रौद्योगिकी विकास -** नवाचार और प्रौद्योगिकी विकास संक्रमण जोखिमों का प्रबंधन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. कंपनियों को स्वच्छ और स्थायी प्रौद्योगिकियों में निवेश करना चाहिए और अपनी प्रक्रियाओं को अद्यतन करना चाहिए. इससे प्रतिस्पर्धा में बने रहने और संक्रमण के दौरान अवसरों का लाभ उठाने में मदद मिलती है.

ज) **वित्तीय साधन और निवेश -** संक्रमण जोखिमों का प्रबंधन करने के लिए वित्तीय साधनों का उपयोग किया जा सकता है. हरित बॉन्ड्स, ईएसजी निवेश, और सस्टेनेबिलिटी लिंक्ड लोन जैसे टिकाऊ वित्तीय साधनों का उपयोग करके कंपनियाँ और निवेशक संक्रमण के दौरान उत्पन्न होने वाले जोखिमों का प्रबंधन कर सकते हैं.

संक्रमण जोखिम और टिकाऊ वित्त का संबंध - टिकाऊ वित्त संक्रमण जोखिमों का प्रबंधन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. टिकाऊ वित्तीय साधनों का उपयोग करके कंपनियाँ और निवेशक संक्रमण के दौरान उत्पन्न होने वाले जोखिमों का प्रबंधन कर सकते हैं. यह न केवल पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देता है, बल्कि आर्थिक लाभ भी सुनिश्चित करता है.

देनदारी जोखिम: जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले कानूनी और वित्तीय दायित्व देनदारी जोखिम के तहत आते हैं. अगर कंपनियां पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली गतिविधियों में शामिल पाई जाती हैं, तो उन्हें कानूनी कार्रवाइयों और जुर्माने का सामना करना पड़ सकता है.

देनदारी जोखिम के घटक निम्नलिखित हैं -

अ) **नियामक देनदारी जोखिम:** ये जोखिम तब उत्पन्न होते हैं जब कंपनियाँ पर्यावरणीय नियमों और कानूनों का उल्लंघन करती हैं. यदि कोई कंपनी निर्धारित मानकों का पालन नहीं करती है, तो उसे कानूनी कार्रवाइयों और जुर्मानों का सामना करना पड़ सकता है. उदाहरण के लिए, प्रदूषण नियंत्रण कानूनों का उल्लंघन करने पर कंपनियों को भारी जुर्माना और कानूनी विवादों का सामना करना पड़ सकता है.

आ) **मुकदमा देनदारी जोखिम:** मुकदमा देनदारी जोखिम तब उत्पन्न होते हैं जब व्यक्तियों या समूहों द्वारा कंपनियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाती है. यह तब हो सकता है जब किसी कंपनी की गतिविधियों के कारण पर्यावरणीय क्षति होती है या जनस्वास्थ्य को खतरा होता है. पीड़ित पक्ष कंपनी के खिलाफ मुआवजे की मांग कर सकते हैं, जिससे कंपनियों को भारी वित्तीय नुकसान हो सकता है.

देनदारी जोखिम के जलवायु परिवर्तन पर पड़ने वाले प्रभाव :

क) **आर्थिक प्रभाव:** देनदारी जोखिम से उत्पन्न कानूनी और वित्तीय दायित्व कंपनियों की आर्थिक स्थिति को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकते हैं. भारी जुर्माने और कानूनी खर्चों के कारण कंपनियों को वित्तीय संकट का सामना करना पड़ सकता है. इसके अलावा, प्रतिपूर्ति की लागत भी कंपनियों की वित्तीय स्थिरता को खतरे में डाल सकती है.

ख) **सामाजिक प्रभाव:** देनदारी जोखिम का सामाजिक प्रभाव भी महत्वपूर्ण है. पर्यावरणीय क्षति और स्वास्थ्य समस्याओं के कारण समाज में असंतोष और असुरक्षा की भावना बढ़ सकती है. इससे कंपनियों की सामाजिक प्रतिष्ठा पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जो उनके व्यापारिक संबंधों और ग्राहक आधार को प्रभावित कर सकता है.

देनदारी जोखिम प्रबंधन के उपाय :

च) **पर्यावरणीय अनुपालन:** कंपनियों को पर्यावरणीय नियमों और मानकों का सख्ती से पालन करना चाहिए. इसके लिए पर्यावरणीय अनुपालन कार्यक्रम और आंतरिक नीतियों को लागू करना आवश्यक है. कंपनियों को नियमित रूप से पर्यावरणीय आकलन और ऑडिट कराना चाहिए ताकि वे नियमों का पालन सुनिश्चित कर सकें.

छ) **जोखिम हस्तांतरण:** कंपनियां बीमा और अन्य वित्तीय साधनों के माध्यम से देनदारी जोखिमों का हस्तांतरण कर सकती हैं. पर्यावरणीय देनदारी बीमा कंपनियों को कानूनी और वित्तीय दायित्वों से सुरक्षा प्रदान करता है. इससे कंपनियों को अप्रत्याशित जोखिमों का सामना करने में सहायता मिलती है.

ज) **सतत् प्रथाएँ:** कंपनियों को सतत् प्रथाओं को अपनाना चाहिए ताकि वे पर्यावरणीय जोखिमों को कम कर सकें. इसमें स्वच्छ प्रौद्योगिकियों का उपयोग, संसाधनों का संरक्षण, और प्रदूषण नियंत्रण उपाय शामिल हैं. सतत् प्रथाओं से कंपनियों की प्रतिष्ठा भी सुधरती है और उन्हें कानूनी जोखिमों का सामना नहीं करना पड़ता.

देनदारी जोखिम और टिकाऊ वित्त का संबंध: टिकाऊ वित्त देनदारी जोखिमों का प्रबंधन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. टिकाऊ वित्तीय साधनों का उपयोग करके कंपनियाँ और निवेशक पर्यावरणीय जोखिमों का प्रबंधन कर सकते हैं. ईएसजी निवेश, हरित बॉन्ड्स, और सस्टेनेबिलिटी लिंक्ड लोन का उपयोग करके कंपनियाँ अपनी पर्यावरणीय जिम्मेदारियों को पूरा कर सकती हैं और देनदारी जोखिमों को कम कर सकती हैं.

टिकाऊ वित्त- जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय क्षति के वर्तमान परिदृश्य में टिकाऊ वित्त की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है. टिकाऊ वित्त न केवल पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देता है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक स्थिरता को भी सुनिश्चित करता है. यह वित्तीय साधनों और निवेश प्रथाओं का एक ढांचा है जो पर्यावरणीय, सामाजिक और शासन ईएसजी मानकों को ध्यान में रखकर संचालित होता है. इस लेख में, हम टिकाऊ वित्त के महत्व, इसके विभिन्न पहलुओं, और इसके प्रभावों का विश्लेषण करेंगे.

टिकाऊ वित्त की परिभाषा- टिकाऊ वित्त का तात्पर्य उन वित्तीय सेवाओं और उत्पादों से है जो पर्यावरणीय, सामाजिक और शासन ईएसजी मानकों को प्राथमिकता देते हैं. इसका उद्देश्य दीर्घकालिक वित्तीय लाभ के साथ-साथ पर्यावरणीय और सामाजिक सुधार को भी सुनिश्चित करना है. टिकाऊ वित्त में हरित बॉन्ड्स, ईएसजी निवेश, सस्टेनेबिलिटी लिंक्ड लोन, और हरित बैंकिंग जैसी पहल शामिल होती हैं.

टिकाऊ वित्त के प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं -

अ) **पर्यावरणीय स्थिरता:** टिकाऊ वित्त का मुख्य उद्देश्य पर्यावरणीय क्षति को कम करना और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना है. इसके लिए हरित प्रौद्योगिकियों और स्वच्छ ऊर्जा में निवेश किया जाता है, जिससे कार्बन उत्सर्जन कम होता है और पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित होती है.

आ) **सामाजिक स्थिरता:** टिकाऊ वित्त सामाजिक स्थिरता को भी प्राथमिकता देता है. इसमें रोजगार के अवसर बढ़ाना, श्रमिकों के अधिकारों का संरक्षण, और सामाजिक असमानताओं को कम करना शामिल है. टिकाऊ वित्तीय साधनों का उपयोग करके सामाजिक विकास को प्रोत्साहित किया जाता है.

टिकाऊ वित्त के महत्व -

क) **पर्यावरणीय संरक्षण:** टिकाऊ वित्त का प्रमुख महत्व पर्यावरणीय संरक्षण में है. हरित बॉन्ड्स और ईएसजी निवेश के माध्यम से कंपनियों को स्वच्छ ऊर्जा, जल संरक्षण, और प्रदूषण नियंत्रण परियोजनाओं में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है. इससे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण होता है और पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित होती है.

ख) **आर्थिक लाभ:** टिकाऊ वित्त न केवल पर्यावरणीय और सामाजिक सुधार करता है, बल्कि आर्थिक लाभ भी प्रदान करता है. दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाने से कंपनियों को वित्तीय स्थिरता

मिलती है और जोखिम कम होते हैं. इसके अलावा, टिकाऊ वित्तीय साधनों में निवेश करके निवेशक दीर्घकालिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं.

ग) **सामाजिक विकास:** टिकाऊ वित्त सामाजिक विकास को भी प्रोत्साहित करता है. रोजगार के अवसर बढ़ाने, श्रमिकों के अधिकारों का संरक्षण करने, और सामाजिक असमानताओं को कम करने के लिए टिकाऊ वित्तीय साधनों का उपयोग किया जाता है. इससे समाज में स्थिरता और समृद्धि बढ़ती है.

टिकाऊ वित्त के साधन : टिकाऊ वित्त के मुख्य लाभकारी साधन अधोवर्णित हैं -

च) **हरित बॉन्ड्स:** हरित बॉन्ड्स वे ऋण साधन होते हैं जिनका उपयोग पर्यावरणीय परियोजनाओं के लिए वित्तपोषण में किया जाता है. यह परियोजनाएं स्वच्छ ऊर्जा, जल संरक्षण, और प्रदूषण नियंत्रण से संबंधित होती हैं. हरित बॉन्ड्स का उद्देश्य पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना है.

छ) **ईएसजी निवेश:** ईएसजी निवेश का तात्पर्य उन निवेश प्रथाओं से है जो पर्यावरणीय, सामाजिक, और शासन मानकों को ध्यान में रखकर की जाती हैं. निवेशक उन कंपनियों में निवेश करते हैं जो इन मानकों का पालन करती हैं और दीर्घकालिक स्थिरता को प्राथमिकता देती हैं.

ज) **सस्टेनेबिलिटी लिंक्ड लोन:** सस्टेनेबिलिटी लिंक्ड लोन वे ऋण साधन होते हैं जिनकी ब्याज दरें कंपनियों की पर्यावरणीय और सामाजिक प्रदर्शन पर आधारित होती हैं. यदि कंपनियां निर्धारित ईएसजी मानकों को पूरा करती हैं, तो उन्हें ब्याज दरों में छूट मिलती है. इससे कंपनियों को सतत् प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है.

टिकाऊ वित्त के उदाहरण -

ट) **हरित बॉन्ड्स का उपयोग:** हाल के वर्षों में हरित बॉन्ड्स का उपयोग तेजी से बढ़ा है. कई कंपनियां और सरकारें स्वच्छ ऊर्जा, जल संरक्षण, और प्रदूषण नियंत्रण परियोजनाओं के लिए हरित बॉन्ड्स जारी कर रही हैं. इसका उद्देश्य पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना और वित्तीय संसाधनों का प्रभावी उपयोग करना है.

ठ) **ईएसजी निवेश का प्रभाव:** ईएसजी निवेश का प्रभाव भी व्यापक है. निवेशक अब उन कंपनियों में निवेश करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं जो पर्यावरणीय और सामाजिक जिम्मेदारियों को गंभीरता से लेती हैं. इससे कंपनियों को अपनी प्रथाओं में सुधार करने और दीर्घकालिक स्थिरता को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित किया जाता है.

जलवायु जोखिम प्रबंधन - जलवायु परिवर्तन ने वैश्विक अर्थव्यवस्था और समाज को गंभीर चुनौतियों का सामना कराया है. इन चुनौतियों से निपटने और प्रभावी रूप से प्रबंधन करने के लिए जलवायु जोखिम प्रबंधन महत्वपूर्ण हो गया है. जलवायु जोखिम प्रबंधन का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न होने वाले विभिन्न प्रकार के जोखिमों का आकलन, निगरानी, और कमी करना है. इसमें भौतिक, संक्रमण, और देनदारी जोखिम शामिल होते हैं. इस लेख में, हम जलवायु जोखिम प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं, उसके प्रभाव, और रणनीतियों का विश्लेषण करेंगे.

जलवायु जोखिम प्रबंधन से तात्पर्य उन प्रक्रियाओं और उपायों से है जो जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न होने वाले जोखिमों की पहचान, मूल्यांकन, निगरानी, और कमी करने के लिए अपनाए जाते हैं. इसका उद्देश्य आर्थिक, सामाजिक, और पर्यावरणीय स्थिरता को सुनिश्चित करना है.

जलवायु जोखिम के प्रकार :

भौतिक जोखिम: भौतिक जोखिम वे जोखिम होते हैं जो जलवायु परिवर्तन के प्रत्यक्ष प्रभावों के कारण उत्पन्न होते हैं. इनमें चरम मौसम की घटनाएं (जैसे बाढ़, तूफान, सूखा), समुद्र स्तर में वृद्धि, और तापमान में वृद्धि शामिल हैं. ये जोखिम प्रत्यक्ष रूप से संपत्तियों, अवसंरचना, और मानव जीवन को प्रभावित करते हैं.

संक्रमण जोखिम: संक्रमण जोखिम वे जोखिम होते हैं जो समाज और अर्थव्यवस्था के उच्च-कार्बन से कम-कार्बन प्रणालियों में संक्रमण के कारण उत्पन्न होते हैं. इनमें नीति और कानून परिवर्तन, प्रौद्योगिकी विकास, और बाजार में बदलाव शामिल हैं. संक्रमण जोखिम कंपनियों और निवेशकों के लिए आर्थिक अस्थिरता और वित्तीय नुकसान का कारण बन सकते हैं.

जलवायु जोखिम प्रबंधन के प्रमुख घटक :

अ) **जोखिम पहचान और मूल्यांकन:** जलवायु जोखिम प्रबंधन का पहला कदम जोखिमों की पहचान और मूल्यांकन करना है. इसमें जलवायु परिवर्तन के संभावित प्रभावों का विश्लेषण और जोखिम के स्तर का निर्धारण शामिल है. जोखिम पहचान और मूल्यांकन के लिए वैज्ञानिक डेटा, मॉडलिंग, और आकलन का उपयोग किया जाता है.

आ) **जोखिम निगरानी और रिपोर्टिंग:** एक बार जोखिमों की पहचान और मूल्यांकन हो जाने के बाद, उन्हें लगातार निगरानी और रिपोर्टिंग की आवश्यकता होती है. इसमें जोखिमों के प्रभाव का नियमित रूप से आकलन करना और रिपोर्ट तैयार करना शामिल है. जोखिम निगरानी और रिपोर्टिंग से निर्णय निर्माताओं को सूचित निर्णय लेने में मदद मिलती है.

इ) **जोखिम कमी और अनुकूलन:** जोखिम कमी और अनुकूलन

जलवायु जोखिम प्रबंधन के महत्वपूर्ण घटक हैं. इसमें जोखिमों के प्रभाव को कम करने और उनसे निपटने के लिए रणनीतियाँ और उपाय अपनाना शामिल है. जोखिम कमी के उपायों में अवसंरचना सुधार, आपदा प्रबंधन योजनाएँ, और सतत् प्रथाओं को अपनाना शामिल है. अनुकूलन उपायों में प्रौद्योगिकी विकास, नीतिगत सुधार, और समुदायों की क्षमता निर्माण शामिल है.

जलवायु जोखिम प्रबंधन की रणनीतियाँ :

क) **अवसंरचना सुधार:** भौतिक जोखिमों से निपटने के लिए अवसंरचना सुधार महत्वपूर्ण है. इसमें बाढ़ नियंत्रण, समुद्र स्तर की वृद्धि से सुरक्षा, और चरम मौसम की घटनाओं के प्रति अवसंरचना की मजबूती शामिल है. अवसंरचना सुधार से संपत्तियों और मानव जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित होती है.

ख) **सतत् प्रथाओं को अपनाना:** कंपनियों और संगठनों को सतत् प्रथाओं को अपनाना चाहिए ताकि वे जलवायु जोखिमों का प्रभावी प्रबंधन कर सकें. इसमें स्वच्छ प्रौद्योगिकियों का उपयोग, संसाधनों का संरक्षण, और प्रदूषण नियंत्रण उपाय शामिल हैं. सतत् प्रथाओं से कंपनियों की वित्तीय स्थिरता और प्रतिष्ठा में सुधार होता है.

ग) नीति और नियामक सुधार: संक्रमण जोखिमों का प्रबंधन करने के लिए नीति और नियामक सुधार आवश्यक है. सरकारें और नियामक संस्थाएँ स्पष्ट और प्रभावी नीतियाँ और कानून स्थापित कर सकती हैं ताकि कंपनियों और उद्योगों को स्थिरता की ओर प्रोत्साहित किया जा सके.

जोखिम कम करने की रणनीतियाँ:

1. **अनुकूलन उपाय :**

   अ) अवसंरचना सुधार :बाढ़ नियंत्रण, समुद्र स्तर की वृद्धि से सुरक्षा, और चरम मौसम की घटनाओं के प्रति अवसंरचना की मजबूती.

   आ) कृषि प्रथाओं का सुधार : सूखा प्रतिरोधी फसलों का उपयोग, जल-संवर्धन तकनीक, और सतत् कृषि प्रथाएँ.

2. **विविधीकरण:**

   क) उत्पाद और सेवा विविधीकरण : विभिन्न उत्पादों और सेवाओं में निवेश करना ताकि किसी एक क्षेत्र पर अत्यधिक निर्भरता न हो.

   ख) भौगोलिक विविधीकरण :विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में व्यापारिक गतिविधियों का विस्तार करना ताकि किसी एक क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से बचा जा सके.

3. **प्रौद्योगिकी उन्नति:**

   च) **नवीन प्रौद्योगिकियों का उपयोग:** स्वच्छ ऊर्जा, हरित प्रौद्योगिकियों, और पर्यावरणीय अनुकूल प्रौद्योगिकियों का विकास और उपयोग.

   छ) **प्रौद्योगिकी हस्तांतरण:** उन क्षेत्रों में नई प्रौद्योगिकियों का स्थानांतरण जहां उनकी आवश्यकता है.

1. **बीमा:**

   त) **पर्यावरणीय बीमा:** कंपनियाँ और संगठन अपने पर्यावरणीय जोखिमों को कम करने के लिए बीमा का उपयोग कर सकते हैं.

   थ) **प्राकृतिक आपदा बीमा:** प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान को कवर करने के लिए बीमा पॉलिसियाँ.

2. **वित्तीय साधन:**

   प) **हरित बॉन्ड्स:** पर्यावरणीय परियोजनाओं के लिए वित्तपोषण करने के लिए हरित बॉन्ड्स का उपयोग.

   फ) **सस्टेनेबिलिटी लिंक्ड लोन:** पर्यावरणीय और सामाजिक प्रदर्शन पर आधारित लोन.

सामरिक योजना :

1. **दीर्घकालिक योजना :**

   य) **दृष्टिकोण:** दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाना और संभावित जलवायु जोखिमों को ध्यान में रखकर योजना बनाना.

1. **साझेदारी और सहयोग:**

   स) सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों के साथ साझेदारी: जलवायु जोखिम प्रबंधन में सहयोग बढ़ाने के लिए.

   श) स्थानीय समुदायों के साथ सहयोग :स्थानीय स्तर पर जोखिम प्रबंधन की योजनाओं का विकास और कार्यान्वयन.

3. **शिक्षा और जागरूकता:**

   क्ष) प्रशिक्षण कार्यक्रम: कर्मचारियों और हितधारकों के लिए जलवायु जोखिम प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

   त्र) जागरूकता अभियान : समुदायों और समाज में जलवायु परिवर्तन और जोखिम प्रबंधन के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए.

निवेश पोर्टफोलियो का विविधीकरण: वित्तीय निवेश की दुनिया में, विविधीकरण एक महत्वपूर्ण रणनीति है जिसका उद्देश्य निवेश के जोखिम को कम करना और दीर्घकालिक लाभ को अधिकतम करना है. विविधीकरण का मूल सिद्धांत यह है कि विभिन्न प्रकार के निवेशों का मिश्रण पोर्टफ़ोलियो की अस्थिरता को कम कर सकता है.

विविधीकरण की परिभाषा: विविधीकरण का तात्पर्य विभिन्न प्रकार के

निवेश साधनों, क्षेत्रों, और परिसंपत्तियों में निवेश करना है ताकि किसी एक निवेश की असफलता से संपूर्ण पोर्टफ़ोलियो पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े. यह रणनीति विभिन्न जोखिमों को संतुलित करने और स्थिर रिटर्न सुनिश्चित करने में मदद करती है.

विविधीकरण के प्रकार: परिसंपत्ति वर्ग विविधीकरण:

1. शेयर: शेयरों में निवेश कंपनियों की भागीदारी को दर्शाता है. इसमें उच्च रिटर्न की संभावना होती है, लेकिन उच्च जोखिम भी जुड़ा होता है.
2. बॉन्ड्स : बॉन्ड्स में निवेश से निश्चित आय प्राप्त होती है. ये कम जोखिम वाले होते हैं और बाजार में अस्थिरता के समय स्थिरता प्रदान करते हैं.
3. रियल एस्टेट : रियल एस्टेट में निवेश से पोर्टफोलियो में स्थिरता आती है और मुद्रास्फीति के समय संपत्ति मूल्य में वृद्धि होती है.

क्षेत्रीय विविधीकरण :

1. **घरेलू निवेश :** अपने देश के भीतर निवेश करना, जिसमें स्थानीय बाजार की स्थिरता और जानकारी का लाभ मिलता है.
2. **अंतर्राष्ट्रीय निवेश :** विदेशों में निवेश करके वैश्विक बाजारों में विविधीकरण और अधिक अवसर प्राप्त किए जा सकते हैं. इसमें मुद्रा और राजनीतिक जोखिम भी होते हैं.

उद्योग विविधीकरण :

1. **प्रौद्योगिकी :** प्रौद्योगिकी क्षेत्र में निवेश से उच्च वृद्धि की संभावना होती है, लेकिन यह भी जोखिम भरा होता है.
2. **स्वास्थ्य सेवा :** स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में निवेश स्थिर और दीर्घकालिक रिटर्न प्रदान कर सकता है.
3. **वित्तीय सेवा :** वित्तीय सेवा क्षेत्र में निवेश स्थिर आय और वृद्धि प्रदान कर सकता है.

विविधीकरण के लाभ :

जोखिम में कमी : विविधीकरण से निवेश पोर्टफोलियो का समग्र जोखिम कम होता है. विभिन्न प्रकार के निवेशों में निवेश करने से किसी एक निवेश की असफलता से संपूर्ण पोर्टफ़ोलियो पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता.

स्थिर रिटर्न: विविधीकरण से पोर्टफ़ोलियो में स्थिरता आती है और दीर्घकालिक रिटर्न सुनिश्चित होते हैं. विभिन्न परिसंपत्तियों और क्षेत्रों में निवेश से बाजार में अस्थिरता के समय भी स्थिर रिटर्न प्राप्त होते हैं.

अवसरों का अधिकतम उपयोग: विविधीकरण से विभिन्न बाजारों और क्षेत्रों में निवेश करने के अवसर मिलते हैं. इससे निवेशक विभिन्न प्रकार की परिसंपत्तियों में निवेश कर सकते हैं और अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकते हैं.

विविधीकरण की रणनीतियाँ :

पोर्टफोलियो पुनर्संतुलन : पोर्टफ़ोलियो पुनर्संतुलन से निवेशक अपने पोर्टफोलियो को निर्धारित आवंटन के अनुसार बनाए रखते हैं. यह प्रक्रिया नियमित रूप से की जाती है ताकि पोर्टफ़ोलियो में किसी एक निवेश का वर्चस्व न हो.

म्यचुअल फंड्स और ईटीएफस्: म्यूचुअल एंड्स और एक्सचेंज-ट्रेडेड फंड्स (ऊिइे) के माध्यम से निवेशक आसानी से विविधीकरण प्राप्त कर सकते हैं. ये फंड्स विभिन्न परिसंपत्ति वर्गों और क्षेत्रों में निवेश करते हैं और निवेशकों को व्यापक विविधीकरण प्रदान करते हैं.

प्रबंधित पोर्टफ़ोलियो: प्रबंधित पोर्टफ़ोलियो के माध्यम से पेशेवर निवेश प्रबंधक निवेशकों के लिए विविधीकृत पोर्टफोलियो बनाते हैं और उनका प्रबंधन करते हैं. यह निवेशकों के लिए सरल और प्रभावी विकल्प होता है.

विविधीकरण की चुनौतियाँ :

अनुसंधान और विश्लेषण: विविधीकरण के लिए विभिन्न प्रकार के निवेशों का गहन अनुसंधान और विश्लेषण आवश्यक होता है. निवेशकों को विभिन्न परिसंपत्तियों और बाजारों के बारे में जानकारी होनी चाहिए.

लागत और शुल्क: विविधीकरण के लिए निवेशकों को विभिन्न प्रकार के निवेशों में निवेश करना पड़ता है, जिससे लागत और शुल्क बढ़ सकते हैं. निवेशकों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उनके पोर्टफोलियो की लागत प्रबंधन में हो.

कार्बन मूल्य निर्धारण: कार्बन मूल्य निर्धारण जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है. इसका उद्देश्य ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन की आर्थिक लागत तय करना और प्रदूषण नियंत्रण में आर्थिक प्रोत्साहन प्रदान करना है. कार्बन मूल्य निर्धारण के माध्यम से, सरकारें और नियामक संस्थाएँ प्रदूषण करने वालों को उनके उत्सर्जन के लिए भुगतान करने के लिए प्रेरित करती हैं.

कार्बन मूल्य निर्धारण की परिभाषा : कार्बन मूल्य निर्धारण से तात्पर्य उन नीतियों और तंत्रों से है जो ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन की आर्थिक लागत तय करते हैं और उत्सर्जन को कम करने के लिए आर्थिक प्रोत्साहन प्रदान करते हैं. इसका मुख्य उद्देश्य Carbon उत्सर्जन को नियंत्रित करना और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना है.

कार्बन मूल्य निर्धारण के प्रकार :

कार्बन टैक्स: कार्बन टैक्स सरकार द्वारा लगाया गया एक कर है जो जीवाश्म ईंधन के दहन से उत्पन्न होने वाले कार्बन डाइऑक्साइड (CO2) उत्सर्जन पर लगाया जाता है. इसका उद्देश्य उच्च उत्सर्जन की लागत बढ़ाकर कंपनियों और उपभोक्ताओं को कम कार्बन उत्सर्जन

वाले विकल्प अपनाने के लिए प्रेरित करना है.

1. **प्रभाव और लाभ :**

स्पष्ट लागत : कार्बन टैक्स से कंपनियों और उपभोक्ताओं को उनके कार्बन उत्सर्जन की स्पष्ट लागत का आभास होता है.

प्रोत्साहन :कम उत्सर्जन वाले ऊर्जा स्रोतों और प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए आर्थिक प्रोत्साहन प्रदान करता है.

सरकारी राजस्व :कार्बन टैक्स से सरकार को राजस्व प्राप्त होता है जिसे जलवायु परिवर्तन नियंत्रण और सतत विकास के लिए उपयोग किया जा सकता है.

उत्सर्जन व्यापार प्रणाली: उत्सर्जन व्यापार प्रणाली, जिसे कैप-एंड-ट्रेड प्रणाली भी कहा जाता है, एक बाजार-आधारित तंत्र है जिसमें सरकार एक निश्चित सीमा (कैप) के भीतर उत्सर्जन परमिट जारी करती है. कंपनियाँ इन परमिटों को खरीद और बेच सकती हैं, और यह सुनिश्चित करती है कि कुल उत्सर्जन सीमा के भीतर रहें.

1. **प्रभाव और लाभ :**

लचीलापन : कंपनियाँ अपनी आवश्यकताओं के अनुसार उत्सर्जन परमिट खरीद और बेच सकती हैं.

नवाचार प्रोत्साहन : कम उत्सर्जन वाली प्रौद्योगिकियों और प्रक्रियाओं को अपनाने के लिए कंपनियों को प्रोत्साहित करता है.

पर्यावरणीय प्रभाव :

ईएसजी से कुल उत्सर्जन सीमा सुनिश्चित होती है, जिससे पर्यावरणीय स्थिरता प्राप्त होती है.

कार्बन मूल्य निर्धारण के लाभ :

उत्सर्जन में कमी : कार्बन मूल्य निर्धारण से कंपनियाँ और उपभोक्ता अपने कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए प्रेरित होते हैं. उच्च उत्सर्जन की लागत से प्रदूषण कम करने के लिए आर्थिक प्रोत्साहन मिलता है.

नवाचार और प्रौद्योगिकी विकास : कार्बन मूल्य निर्धारण से कम कार्बन उत्सर्जन वाली प्रौद्योगिकियों और प्रक्रियाओं का विकास प्रोत्साहित होता है. इससे स्वच्छ ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता, और पर्यावरणीय अनुकूल प्रौद्योगिकियों में नवाचार होता है.

पर्यावरणीय और स्वास्थ्य लाभ: ग्रीन हाऊस गैस उत्सर्जन को कम करके, कार्बन मूल्य निर्धारण पर्यावरणीय और स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है. इससे वायु गुणवत्ता में सुधार होता है और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम किया जाता है.

कार्बन मूल्य निर्धारण की चुनौतियाँ :

राजनीतिक और सामाजिक स्वीकृति: कार्बन मूल्य निर्धारण की नीतियाँ लागू करने में राजनीतिक और सामाजिक बाधाएँ हो सकती हैं. उच्च ऊर्जा लागत और करों के कारण जनता और उद्योगों में विरोध हो सकता है.

आर्थिक प्रभाव : कार्बन मूल्य निर्धारण से उद्योगों और उपभोक्ताओं पर आर्थिक भार बढ़ सकता है. उच्च ऊर्जा लागत और उत्पादन खर्च बढ़ने से आर्थिक अस्थिरता हो सकती है.

कार्बन मूल्य निर्धारण के प्रभावी कार्यान्वयन की रणनीतियाँ :

पारदर्शिता और संवाद : कार्बन मूल्य निर्धारण की नीतियों के कार्यान्वयन में पारदर्शिता और संवाद महत्वपूर्ण हैं. सरकारों को जनता, उद्योगों, और हितधारकों के साथ संवाद स्थापित करना चाहिए और नीतियों की स्पष्टता सुनिश्चित करनी चाहिए.

आर्थिक सुधार और समर्थन: कार्बन मूल्य निर्धारण से उत्पन्न आर्थिक प्रभावों को कम करने के लिए आर्थिक सुधार और समर्थन महत्वपूर्ण हैं. सरकारें कर राजस्व का उपयोग आर्थिक सुधार, रोजगार सृजन, और सामाजिक कार्यक्रमों के लिए कर सकती हैं.

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग : अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और समन्वय से कार्बन मूल्य निर्धारण की नीतियाँ अधिक प्रभावी हो सकती हैं. देशों को वैश्विक स्तर पर कार्बन मूल्य निर्धारण की नीतियाँ अपनाने और कार्यान्वयन में सहयोग करना चाहिए.

अनुसंधान और नवाचार : कार्बन मूल्य निर्धारण के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए अनुसंधान और नवाचार महत्वपूर्ण हैं. स्वच्छ ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता, और पर्यावरणीय अनुकूल प्रौद्योगिकियों में निवेश और अनुसंधान से कार्बन उत्सर्जन को कम किया जा सकता है.

निष्कर्ष :

जलवायु जोखिम और टिकाऊ वित्त का परस्पर संबंध स्पष्ट है. जलवायु परिवर्तन के जोखिमों को प्रबंधित करने और पर्यावरणीय स्थिरता को प्रोत्साहित करने के लिए टिकाऊ वित्त आवश्यक है. यह न केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ सुनिश्चित करता है. जलवायु जोखिम और टिकाऊ वित्त पर ध्यान केंद्रित करके हम एक अधिक स्थिर और सुरक्षित भविष्य का निर्माण कर सकते हैं.

डॉ ललित फरक्या
वरिष्ठ प्रबन्धक
क्षेत्रीय कार्यालय - छत्रपति
सम्भाजीनगर, (औरंगाबाद)

नराकास (बैंक), वडोदरा द्वारा हमारे क्षेत्रीय कार्यालय बड़ोदा को ''नराकास का आधार हिंदी में पत्राचार'' अभियान के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली 'उत्तर' के अंतर्गत नयाबांस नोएडा शाखा को नराकास, बैंक (नोएडा) द्वारा उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु शाखा श्रेणी में वर्ष 2023-24 हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ.

क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली 'उत्तर' के अंतर्गत आने वाली राइटगंज गाज़ियाबाद शाखा को नराकास, बैंक (गाज़ियाबाद) द्वारा वर्ष 2023-24 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ.

बैंक नराकास रायपुर द्वारा आंचलिक कार्यालय रायपुर को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया.

चंडीगढ़ बैंक नराकास की छमाही बैठक में हमारे क्षेत्रीय कार्यालय चण्डीगढ़ को वर्ष 2023-24 के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ.

बैंक नराकास जयपुर द्वारा आयोजित वार्षिक राजभाषा समारोह में वर्ष 2023 -24 हेतु हमारे क्षेत्रीय कार्यालय जयपुर को श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सिवान द्वारा वर्ष 2023-24 के दौरान राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए क्षेत्रीय कार्यालय, सिवान को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया.

नराकास मुजफ्फरपुर द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में वर्ष 2023-24 के अन्तर्गत उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु हमारे, क्षेत्रीय कार्यालय, मुजफ्फरपुर को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया.

नराकास (बैंक एवं बीमा) पटना द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में वर्ष 2023-24 के अन्तर्गत उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु हमारे, आंचलिक कार्यालय, पटना को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया.

नराकास, अयोध्या द्वारा वर्ष 2023-24 के अंतर्गत उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु हमारे क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया.

नराकास दक्षिण गोवा द्वारा हमारे, वास्को-द-गामा शाखा को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया.

बैंक नराकास देवास द्वारा हमारे भोपाल आंचलिक कार्यालय को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

नराकास रांची द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय रांची को राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया.

बैंक नराकास अहमदाबाद द्वारा हमारे आंचलिक कार्यालय अहमदाबाद को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया.

हैदराबाद अंचलाधीन क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु वर्ष 2023-24 के लिये राजभाषा शील्ड (द्वितीय) से सम्मानित किया गया.

हैदराबाद अंचलाधीन क्षेत्रीय कार्यालय, विशाखापट्टनम के अधीन श्रीकाकुलम शाखा को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु वर्ष 2023-24 के लिये राजभाषा शील्ड (तृतीय स्थान) से सम्मानित किया गया.

नराकास भिलाई-दुर्ग द्वारा वर्ष 2023 के राजभाषा नीतियों के अनुपालन में नराकास स्तर पर उल्लेखनीय योगदान के लिए हमारे भिलाई शाखा को राजभाषा आरोहण पुरस्कार प्रदान किया गया.

बैंक नराकास जयपुर द्वारा आयोजित वार्षिक राजभाषा समारोह में क्षेत्रीय कार्यालय जयपुर को हिंदी पत्राचार अभियान के अन्तर्गत सर्वाधिक पत्राचार करने हेतु द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया.

प्रेरणादायी संस्मरण

गत 12 जून 2022 की यादें है, ग्वालियर की ओर प्रस्थान के प्रयोजन से कटिहार रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर 1 पर अपने निर्धारित ट्रैन के अनियत समय की प्रतीक्षा में बैठे युवाओं के भीड़ की टोली को टकटकी निगाहों से देख रहा था. रात के करीब 1 बज रहे थे, अपने कैरियर की तलाश में हजारों युवाओं की टोली रेलवे स्टेशन की भरी भीड़ में अपने थकान व पलकों को विराम दे रही थी. उनकी आँखें आधी खुली थी, जो अगली सुबह की पहली ट्रेन का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे कि वे पहली ट्रेन के मिलते घर व अपने छात्रावास को लौटें. मालूम पड़ा कि सभी किसी प्रतियोगी परीक्षा में भाग लेने आये थे, लेकिन रात को कोई ट्रेन न होने की वजह से उन्हें अपने चिरपरिचित रेलवे स्टेशन का ही सहारा लेना पड़ा. इस भीड़ से खुद का जुड़ावपन भी महसूस हो रहा था, संघर्ष के दिनों में समान्यत: सभी छात्रों को न्यूनाधिक ऐसे अनुभव का अवसर जरूर प्राप्त होता है. छात्रों का रेल व रेलवे स्टेशन के साथ अटूट व अविस्मरणीय अनुभव सामान्य सी बात है.

इसी दृश्य व भाव के बीच मेरी नजर अचानक एक कुत्ते पर पड़ी, जो पटरी की दूसरी तरफ के प्लेटफार्म नंबर 2 पर यूं ही शांत भाव से अकेले इधर उधर टहल रहा था.

यूँ तो वो भूखा बिल्कुल नजर नहीं आ रहा था, पर

मेले जैसे उमड़ी भीड़ का आनंद ले रहा था, तभी प्लेटफार्म नंबर 1 पर टहलकदमी कर रहे कुत्ते की एक टोली की नजर उसपर पड़ी, उसका स्वछंद व एकांगी चाल इस समूह को रास नहीं आ रहा था. दोनों प्लेटफॉर्म के बीच दो पटरियां बिछी थीं, जिससे दोनों के बीच का फांसला व पटरी की ऊंचाई भी काफी थी. होना क्या था, अनायास इधर की टीम के सभी 4-5 सदस्यों ने उसपर अचानक हमले की तैयारी की. थोड़ी देर आपसी सलाह के बाद, जोर-जोर से उसपर भौंकने लगे. इस दृश्य ने मेरी नजरें अब उनकी ओर केंद्रित हो गई. उस तरफ का अकेला कुत्ता भी उधर अपनी जगह ही ठहर गया, भला कोई यूँ ही वेवजह भौंके तो कोई चुप कैसे रहे, उसने भी भौंकना शुरु किया, लेकिन इस पांच के सामने उसकी क्या चलती. दोनों के ये झगड़े जारी ही थे कि इतने में इधर टीम का एक सदस्य काफी उत्तेजित हो रहा था, दूसरे सभी सदस्य भी उसे उकसाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे थे. बारी-बारी से सभी ने एक दूसरे को उकसाया और वे आगे जाकर भौंकने का नेतृत्व कर फिर शांत हो जाते, सामने वाला अकेला कुत्ता अब शांत चित इस समूह के सभी सदस्यों का मुँह देख रहा था व उनकी अगली प्रतिक्रिया का इंतजार कर रहा था. प्लेटफार्म से नीचे उतरना किसी के लिए इतना आसान न था, यदि एक बार उतरे तो प्लेटफार्म की ऊंचाई इतनी थी कि दोबारा चढ़ना मुश्किल-सा था, इन्हीं मजबूरियों ने दोनों को वास्तविक हमले से बचाये रखा. यूं तो साफ़ नजर आ रहा था कि दोनों के बीच कोई दिवानी मामले को लेकर कुछ विवाद तो नहीं है लेकिन दोनों के बीच पटरियों व उसके गहराईयों की बाध्यता न होती तो यह फौजदारी मामला जरूर बन जाता. अकेले कुत्ते का इतना शांत व बेफिक्र होना इस समूह को फिर से विचार करने पर मजबूर कर दिया, लेकिन सभी भौंक-भौंक कर खुद भी थक गए थे. इस बार सभी ने उत्तेजित होकर पूरी ताकत से भौंकना आरम्भ किया, सामने वाला कुत्ता मधुर आवाज से भौंकता व फिर शांत व स्थिर खड़े होकर उसकी अप्रभावित चाल को मजाक समझकर यूँ ही देखता रहता. इतने में समूह के सभी सदस्यों ने तय कर आर पार की ठान ली, लगातर निष्फल प्रयासों से गुस्से की लौं में जल रहे थे, आखिर शुरू भी तो इस समूह ने ही किया था. अब सभी ने मिलकर अदम्य शक्ति से जोर- जोर से भौकना आरम्भ किया. सभी कूद पड़ने को तैयार थे लेकिन प्लेटफार्म से पटरी की गहराई ने अब भी उनके दिमाग में डर को बनाये रखा था. सभी ने मिलकर फिर अपने एक सदस्य को उकसाया तो वह सामने अकेले कुत्ते को धर दबोचने के लिए अतंत: कूद ही पड़ा. कूदते ही सामने वाले की तरफ दौड़ने के बजाय पुन: वापस प्लेटफार्म की तरफ देखा व पुन: समूह में शामिल होने का अथक प्रयास करने लगा, लेकिन प्लेटफार्म की ऊंचाई काफी थी. बाकि के समूह सदस्य उसे मदद करने की बजाय खुद भी बस नीचे की ओर झांककर यूं ही जायजा ले रहे थे उसे ऊपर लाने की कोशिश तक नहीं दिख रहे थे. फिर बाकि बचे चारो कुत्ते आगे बढ़कर तितर बितर होने लगे. अतिउत्तेजना में दूसरे पर हमला करने के आक्रोश ने उस कुत्ते को अब बेचारा बना दिया था. ऊपर आने का कोई तत्काल विकल्प नहीं था, सभी

साथी भी उसका साथ छोड़ चुके थे. अब वह अकेले प्लेटफार्म की लंबाई को अनचाहे आंखों से निहार रहा था. विकल्प की अनुपलब्धता ने निरिह मार्ग पर धकेल प्लेटफार्म के नीचे पटरी की लंबी दूरी तयकर सामान्य प्लेटफार्म पर आने पर विवश कर दिया. दूरी इतनी थी कि रात के अंधेरे में अंतिम सीमा भी नहीं दिख रही थी, कुछ दूर तो रोशनी थी भी,आगे चलकर अंधेरा व सुनसान-सा था. सामने वाला अकेला कुत्ता अब शांत चित बैठकर उसकी बेबसी को नजदीक से यूँ हीं देख रहा था, दुश्मन समूह के सभी साथियों को एक-एक कर तितर बितर होते देख रहा था. वे पहले की तरह अब भी आक्रामक नहीं दिख रहे थे. ट्रेन की प्रतीक्षा में बैठे अगले एक घंटे तक उस परित्यक्त कुत्ते पर मेरी नजर नहीं पड़ी, शायद समय व परिस्थितियों ने उसे और किसी मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया हो.

यद्यपि यह कहानी कुत्तों के बीच की अनायास घटना की है तथापि शक्ति, सत्ता, प्रसिद्धि, अहंकार व उकसावे के आगोश में आकर प्राय: मनुष्यों के भी अव्यवहारिक कदमों को हम आये दिन समाज के विभिन्न तबकों में व आसपास जरूर महसूस करते हैं, जब व्यक्ति क्षणिक शक्ति व सत्ता के नशे में समय की ताकत को भी कमजोर समझने लगते है व उनमे अहम के विकास के साथ विनम्रता का क्षय होने लगता है. कहते है कि नम्रता की अल्पता अक्सर लोगों को निष्ठुर व अव्यवहारिक बना देती है. समय अपने बदलाव के साथ जब उस पर नित्य अनपेक्षित परिस्थितियों का प्रहार कर उसे नित नये संकटों के नए मुहाने पर खड़ा करता है तब व्यक्ति घुटने टेककर पश्चाताप करने पर विवश हो जाता हैं, जो न जीवन मे बीते हुए कल की नींव को मजबूत कर सकता है और न ही भविष्य के सपनों में अपेक्षित ईंधन भर सकता है, सिवाय लोगों के बेचारगीपन के ऋणी होने के.

वास्तविक शक्ति प्राप्त सामान्य मनुष्य न शक्ति प्रदर्शन करता है, न ही किसी निर्बल का उपहास, वरण शक्ति लोगों को विनम्र, मृदुभाषी बनाते हैं व उनके प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष ज़िम्मेदारियों को और बढ़ा देती है. अपने कर्मो पर बल दें, परिणामस्वरूप मिले यश, कृति, प्रसिद्धि व अवसर को किसी और की अप्रसन्नता और दु:ख का कारण न बनने दें !

कर्नल कुमार
मुख्य प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, कटिहार

शायद मैं चूक गया

मैंने झेला झंझावातों को,
निखारा अपने आप को संघर्षों से।
नित-नित सीखा कला जीने की
विश्वास था एक दिन निखरेगा जीवन,
पर शायद मैं चूक गया।

मैं पहुँचा था मायानगरी एक झुंड के साथ,
जुड़ा रहूँ अपनी जड़ों से अपने बच्चों के पास
लौट आया अपने घोंसले में इसी सोच के साथ
पर कहां सोच पूरा हुआ,और शायद मैं चूक गया।

मैं तो जड़ों से जुड़ा रहा पर नई पीढ़ी को जोड़ न पाया,
मेरी जड़े मजबुत रही पर शाखाएँ सारी अलग हो गई।
मैं अकेला खड़ा रहा,बाकी सारे छोड़ गये,
जोड़ न सका शाखाओं को,शायद मैं चूक गया।

वे मुझे छोड़ गये,
जिनको कभी भीड़ में थामा हुआ था मैने,
पता न चला मुझे,
कब उसी भीड़ में खो गया मैं।

सपने बुने थे ढ़ेर सारे मैंने,
पर वे हकीकत बन न पाएं
शायद मैं चूक गया,मन से पूरा टूट गया।

चलते थे जो पकड़ के उंगुली,मेरे बताये राहों पर,
वो खुद ही सक्षम हैं,चलने को अब अपने राहों पर
उनके नई सोच के आगे,मेरी राहें अब बेमानी हैं,
अपनी राह चल दिये वे,
छोड़ मुझे सुनसान सड़कों पर।

मेरा सपना टूट गया,शायद मैं चूक गया,
मन से पूरा टूट गया,शायद मैं चूक गया।

संजय कुमार
उप क्षेत्रीय प्रमुख,
क्षेत्रीय कार्यालय,कोलकाता (दक्षिण)

लोकल ट्रेन का सफर

यह सिर्फ एक जगह से दूसरी जगह जाने का ज़रिया नहीं है, बल्कि यह वह जगह है जहाँ हम अपने आप को मज़बूत, सक्षम और जीवंत महसूस करते हैं. जहाँ हमारी आत्मा को नयी ताकत मिलती है, जहाँ हम शक्तिशाली, खुश और समझदार महसूस करते हैं.

1. मजबूत महसूस करना:

जब हम प्लेटफॉर्म पर कदम रखते हैं, तो हम एक ऐसी दुनिया में प्रवेश करते हैं जहाँ हर ओर भीड़ और हलचल है.

लेकिन उस भीड़ में भी, हम अपनी पहचान बनाए रखते हैं, डटे रहते हैं. हर कदम, हर धक्का, हर क्षण हम दृढ़ता से खड़े होते हैं, अपनी दिनचर्या, अपने सपनों, और अपनी ताकत का बोझ उठाए हुए इस भागमभाग में भी, हम अडिग रहते हैं.

2. मसरूफ़ रहना:

ट्रेन के अंदर, ज़िन्दगी रुकती नहीं, बल्कि आगे बढ़ती जाती है. स्टेशनों के बीच के छोटे-छोटे क्षणों में हम खुद के लिए समय निकालते हैं. एक हल्का सा नाश्ता, संगीत की धुनें, किताब का कोई पन्ना, या फिर कभी-कभी बस अपनी थकी आँखें बंद कर लेना. यह छोटा सा विराम, यह थोड़ा सा सुकून, हमारी शरणस्थली बन जाता है, पूरे दिन की हलचल भरी जिंदगी में एक पल की राहत देता है.

3. खुशियाँ पाना और यादें बनाना:

चाहे ट्रेन भीड़ और शोर से भरी हो, लेकिन उसके भीतर खुशी की हल्की सी लहर होती है. हर यात्रा में एक अवसर होता है खुशियों का. किसी अजनबी से साझा की गई एक मुस्कान, या एक बातचीत जो दोस्ती में बदल जाती है. ये यात्राएँ, चाहे रोज़ की हों, दिल में एक छाप छोड़ जाती हैं, सीखने का अवसर, यादों का सफर. ट्रेन केवल एक सवारी नहीं, बल्कि एक ऐसी जगह है जहाँ कहानियाँ बनती हैं, और यादें सँजोई जाती हैं. कहीं बडा ग्रुप संगीत की लय में डुबा हुआ दिखता हैं. किसी का जन्म दिन मनाया जाता है. महिलाओं के डिब्बे में तो जन्म दिन से लेकर गोद भराई तक की रस्में ट्रेन के गृप द्वारा मनाई जाती हैं. कई बार एक दूसरे को मिलने का यह स्थान बन जाता है.

4. स्मार्ट होना:

लोकल ट्रेन में सफर करना सिर्फ ताकत की बात नहीं है, इसमें होशियारी, फुर्ती और तेज़ी भी चाहिए. ट्रेन का सफर करने वाला हर व्यक्ति ट्रेन की लय जानता है, भीड़, रुकने का समय, और सही समय पर उतरने की कला भी जानता है. कभी-कभी वह ट्रेन प्लॅट्फॉर्म पर रूकने से पहले ही छलांग लगाता है, बाहर इंतज़ार कर रही दुनिया के लिए तैयार हो जाता है. ट्रेन में सीट पकड़ने के लिए भी वह चलती ट्रेन में छलांग लगाता है. यह गतिमानता लोकल ट्रेन में सफर करने वाले व्यक्ति की रूह में मिल जाती है और वह स्मार्ट एवं सक्रिय रहता है. इन क्षणों में, वह सिर्फ एक यात्री नहीं, बल्कि एक योद्धा होता है, जो अपने शहर में पूरी समझदारी और साहस से सफर कर रहा होता है.

संक्षेप में, लोकल ट्रेन सिर्फ एक परिवहन का साधन नहीं है; यह एक चलती-फिरती कहानी है, एक सफर जो आपको म. जबूत बनाता है. यह वह जगह है जहाँ यात्री अपनी ताकत, खुशी और समुदाय को पाते हैं. एक सुखद और स्मरणीय यात्रा का अनुभव लेते हैं.

गौरी कल्याणी
सहायक महाप्रबंधक (एम एम ज़ेड ओ)

नाटक

हमारी हिंदी अंतर्राष्ट्रीय भाषा!

(भारत की विविधता ही उसकी पहचान है. इसमें कुल 29 राज्यों का सामर्थय है. यहां करीब 453 भाषाएं बोली जाती हैं जिनमें से कुल 22 भाषाओं को भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त है. इन भाषाओं में हिंदी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है. हमें विश्वास है वो दिन दूर नहीं जब हिंदी के सर पर राष्ट्रभाषा का ताज होगा.

यह नाटक कक्षा में बैठे कुछ ऐसे बच्चों का है जो हिंदी को भारत की पहचान बनाने का हौंसला रखते हैं.

(बच्चे कक्षा में आते हुए)

नेहा: (रजनीकांत अंदाज में गाना गाते हुए) आज हिंदी दिवस है, आज हिंदी दिवस है, तो- तो आज हिंदी का दिन है.

राबिया: बड़ा ही परेशान कर रखा है इस अंग्रेजी ने. मेरी माँ तो सुबह उठकर मुझे हिदायतें देनी शुरू कर देती हैं. उनका बस चले तो खाना भी अंग्रेजी में ही खिला दें.

नैंसी: अरे तेरी माँ तो बहुत अच्छी हैं, अगर मेरी माँ का बस चले तो वह मेरे सुबह की दिनचर्या भी मुझे अंग्रेजी में ही करा दें.

हा हा हा हा (तीनों एक साथ हंसते हैं)

(अध्यापिका का कक्षा में प्रवेश, जो एक अंग्रेजी की अध्यापिका हैं और उनकी हिंदी अच्छी नहीं है. वह अलग अंदाज में हिंदी में बातें करती हैं.)

अध्यापिका: चिल्ड्रन आज कौन सा डे है?

सीता: धीरे से बुदबुदाती हुई- अरे डे नहीं अध्यापिका जी दिन, और चिल्ड्रन नहीं मैडम जी बच्चे.

अध्यापिका- ओह या या.

और फिर क्या था सब बच्चें एक साथ बोल पड़े: हिंदी दिवस.

अध्यापिका: तो आज हम केवल हिंदी में ही बात करेंगे. Ok students....Oh sorry... माफ कीजिए ... Oh... Whatever.... प्रिंसिपल मैम ने यह कहां फंसा दिया!

(अध्यापिका अपने कक्षा के निजी कार्य करने में व्यस्त हो जाती हैं.)

(सभी बच्चें धीरे-धीरे आपस में बातें कर रहे हैं)

राबिया: चलो अच्छा है आज तो हमें छूट मिली इस अंग्रेजी से. मुझे तो आधी समझ में आती है और आधी ऊपर से चली जाती है.

(तीनों मित्र जो एक ही बेंच पर बैठे हैं, हंसते हुए)

नैंसी: कल मैं अपनी माँ से बात कर रही थी... ऐसे ही हिंदी दिवस के बारे में, वह भी बड़ी ही परेशान थी उनकी पढ़ाई भी हिंदी माध्यम में ही जो हुई है. लेकिन आज का जमाना केवल अंग्रेजी अंग्रेजी और बस अंग्रेजी का हो गया है. मुझे मालूम है कि वह अंग्रेजी बोलने के लिए मुझ पर प्रभाव तो डालती हैं, लेकिन अंग्रेजी उनको भी उतनी नहीं आती.

सीता: मेरी माँ को भी कहां अंग्रेजी आती है. हम सब की माँ एक जैसी हैं. हाय जमाना! पता नहीं क्यों सब अंग्रेजी के पीछे भाग रहे हैं, हमारे अपने भारत में कितनी सारी भाषाएं हैं उन सबको तो इतनी अहमियत नहीं दी जाती!

राबिया: अरे तुझे पता नहीं अंग्रेजी अंतरराष्ट्रीय भाषा है. हमारे देश से विदेशी कंपनियों के साथ कारोबार किया जाता है. हमारे भविष्य को देखते हुए हमारे माता-पिता अंग्रेजी माध्यम पर जोर देते हैं. (राबिया ने जोश-जोश में थोड़ा तेज बोल दिया था)

अध्यापिका: keep quiet! Oppss.. शांति के साथ बैठिए.

नैंसी: (धीरे से): हमारी क्लास में तो कोई शांति ही नहीं है.हा हा हा..

(तीनों अपनी बातों को आगे बढ़ाते हुए)

राबिया: तू कह तो बिल्कुल सही रही है लेकिन कितना अच्छा होता अगर हमारी हिंदी भी अंतर्राष्ट्रीय भाषा होती.

सीता: लो कर लो बात. तुझे यह भी नहीं मलूम कि हिंदी न केवल अंतर्राष्ट्रीय भाषा है बल्कि विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषाओं में से एक है और वो दिन दूर नहीं जब हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा बनेगी.

सीता: हमारी हिंदी, भारत की, राष्ट्र भाषा नहीं, राजकाज की भाषा अर्थात राजभाषा है. आगे चलकर यह और फूले-फलेगी. अगर हम भारतवासी कुछ ठान लें तो वह करके ही रहते हैं. मैंने तो अभी से ही निश्चय कर लिया है. मैं आगे चलकर हिंदी साहित्य की कीर्ति पूरे विश्व में फैलाऊंगी.

राबिया: बिल्कुल सही कहा तूने, मैं तेरे साथ हूं, जो भाषा

समझ में ही नहीं आती उसके पीछे क्यों भगाना? हम अपनी ही भाषा में बहुत कुछ कर सकते हैं. भाषा का सही ज्ञान जरूरी है.

नैंसी: सही कह रहे हो तुम दोनों. कैसे भूल सकते हैं हम, हमारे महान साहित्यकारों कबीर दास, रामधारी सिंह दिनकर, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, रहीम, तुलसीदास, सूरदास, कालिदास आदि को. यह सब हमारे प्रसिद्ध साहित्यकार हैं. लेकिन आज के जमाने का कोई है जो इनके द्वारा रचित समृद्ध साहित्य को प्रोत्साहित कर रहा हैं! शायद नहीं. हर कोई विदेशी भाषा के पीछे पड़ा है.

नैंसी: चलो मिलकर ठान लें कि हम साहित्य को, हिंदी भाषा को, एक अलग पहचान दिलाएंगे.

तीनों एक साथ बोलते हैं:- जय हिंद! जय भारत.

(पर्दे पर अंधेरा छा जाता है)

अध्यापिका: (जो कोई और नहीं उसकी माँ ही है) उठो उठो उठो, कितनी देर हो गई स्कूल के लिए तैयार नहीं होना है!

सीता: (आश्चर्यचकित होकर उठते हुए नारा लगती है) जय हिंद!

माँ: यह क्या कर रही है तू.

सीता: माँ यह आप हो. अरे, मुझे तो देर हो गई, आज तो हिंदी दिवस है, मजे आएंगे विद्यालय में!

प्रदीप शर्मा
प्रबंधक,
केन्द्रीय कार्यालय मुंबई

हिन्दी से हिन्दुस्तान

जन्म हुआ मानवता का
हां यही तो वह स्थान है
दी सीख जिन्होंने धर्म की हमको
तुलसी, कबीर संत महान हैं,
संस्कृत से संस्कृति हमारी
हिंदी से हिंदुस्तान है.

हिंदी का महत्व बहुत है,
बात ये सबको समझाई,
यही है कारण कि इन सबकी
विश्व में आज पहचान है
संस्कृत से संस्कृति हमारी
हिंदी से हिंदुस्तान है.

है भाषा ये जनमानस की जो
ह्रदय से सबको जोड़ती है
पढ़ा जाए इतिहास तो ये
सभ्यता की ओर मोड़ती है,
हर हिंदुस्तानी के दिल में
इसके लिए सम्मान है
संस्कृत से संस्कृति हमारी
हिंदी से हिंदुस्तान है.

हिंदी से हिंदुस्तान है
बात करें जो लिपि की तो
बात ही इसकी निराली है
जैसा लिखते वैसा बोलें
पुराना नाम इसी का पाली है
गौतम बुद्ध की रचना का भी
इसी भाषा में ज्ञान है
संस्कृत से संस्कृति हमारी
हिंदी से हिंदुस्तान है.

मुगल आए या आए गोरे
सबको मार भगाया था.
सारा भारत जब आपस में
हिंदी से जुड़ पाया था.
तभी तो हिंदी भाषा में
गाया जाता राष्ट्रगान है,
संस्कृत से संस्कृति हमारी
हिंदी से हिंदुस्तान है.

हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई
आपस में ये सब भ्राता हैं,
है हिंदी जिसके कारण ही
आपस में इनका नाता है
मिल-जुलकर जो ये रहते तो
भारत का होता निर्माण है
संस्कृत से संस्कृति हमारी
हिंदी से हिंदुस्तान है.

छोड़ के हिंदी अंग्रेजी बोले
इसी बात की है निराशा
सीखें अन्य भाषाओं को पर,
अपनाएं अपनी भाषा,
दुनिया में बतलाओं सबको
हिंदी से हमारी शान है
संस्कृत से संस्कृति हमारी
हिंदी से हिंदुस्तान है.

ईशू चन्द्रा
सहायक प्रबंधक (राजभाषा),
क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़

नियमित प्रयुक्त अंग्रेजी नोटिंग का हिंदी अनुवाद

Hindi Translation Of Regularly Used English Noting

क्रम संख्या	English Noting	हिंदी अनुवाद
1	Accepted provisionally	अस्थायी रूप से स्वीकृत
2	According to rule in vogue	वर्तमान / चालू / प्रचलित नियमानुसार
3	Accord sanction	स्वीकृति प्रदान करें / स्वीकृति दीजिए
4	Acting in good faith	सदभाव से कार्य करते हुए
5	Action may be taken	कार्रवाई की जाए
6	Action taken	कार्यवाही की गई
7	Advise further development	आगे की प्रगति सूचित करें
8	Advise us accordingly	तदनुसार हमें सूचित करें
9	Agreed	सहमत हूं.
10	All avenues are exhausted initiate legal action immediately	सभी प्रयास समाप्त, तुरंत कनूनी कर्रवाई करें.
11	All staff to note	सभी स्टाफ नोट करें.
12	Allowed	अनुमत
13	Annual grade increment sanctioned	वार्षिक क्रम की वेतनवृद्धि स्वीकृत.
14	Approval may be obtained	अनुमोदन प्राप्त किया जाए.
15	Approved	अनुमोदित
16	As early as possible	यथाशीघ्र
17	Ascertain the position	स्थिति का पता लगाएं.
18	Await reply	उत्तर की प्रतीक्षा करें.
19	Bill may be paid	बिल का भुगतान करें.
20	By authority of	के अधिकार से
21	By return post	लौटती / वापसी डाक से.
22	Call for report	रिपोर्ट मंगवाएं.
23	Case is filed	मामला दायर कर दिया गया है.
24	Claim is time-barred	दावा कालातीत है.
25	Clarify the position	स्तिथि स्पष्ट करें.
26	Confirm please	पुष्टि करें.
27	Contention is untenable	तर्क / विचार अस्वीकार है.
28	Copy for approval	अनुमोदन हेतु प्रति.
29	Correct Demarcation	उचित सिमांकन
30	Corrigendum may be put up	शुद्धि-पत्र प्रस्तुत करें.
31	Delay is regretted	विलम्ब के लिए खेद है.
32	Debarred from promotion	पदोन्नति से वंचित

राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2024-25 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य विवरण	''क'' क्षेत्र	''ख'' क्षेत्र	''ग'' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 100% 2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 100% 3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 65% 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 100%	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 90% 2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 90% 3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 90%	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 55% 2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 55% 3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों	40%	30%	20%
		(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, ''क'' क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, ''ख'' क्षेत्र में 25% और ''ग'' क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए		

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

Azadi Ka Amrit Mahotsav

G20

वसुधैव कुटुंबकम्
राजभाषा निज गौरवम्

हिन्दी दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएँ

14 सितम्बर

www.centralbankofindia.co.in